सन् 1998 से लगातार प्रकाशित

जहाज मन्दिर

अधिष्ठाता - पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 • अंक 1-7 • 5 अक्टूबर 2020 (सयुक्तांक) • मूल्य : 20 रु.

शासनाधिपति प्रभु महावीर के निर्वाण कल्याणक पर कोटिशः वंदन

गुरु गौतम केवलज्ञान एवं नववर्ष की बधाई

प्रथम पुण्यतिथि हार्दिक श्रद्धांजलि

अध्यक्ष
श्री शीतलनाथ भगवान एवं
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी ट्रस्ट, पादरु

संयोजक
श्री जीरावला जिनकुशलसुरि
दादावाडी ट्रस्ट

सचिव
श्री जिनकान्तिसागरसुरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मंदिर, मांडवला

ट्रस्टी
जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढी
अखिल भारतीय खरतरगच्छ
प्रतिनिधि महासभा

श्री कैलाशकुमार भंवरलालजी संकलेचा (पादरु)

जन्म
10.11.1971

साथ है उमंगों में, साथ है संस्कारों में,
साथ है भावनाओं में, साथ है निष्ठा में,
साथ है प्रगति में, साथ है सफलता में,
आप साथ हैं हमारे जीवन के हर कदम पे

महाप्रयाण
07.10.2019

श्रद्धावंत

माताजी	:	मोहिनीदेवी भंवरलालजी संकलेचा
काकाजी	:	जुगराज, मोतिलाल, प्रवीणकुमार
भाई-भाभी	:	ललितकुमार-ललितादेवी, राजकुमार-संगीतादेवी, गौतमचन्द-शिल्पादेवी
चचेरा भाई	:	पंकज, सुरेश, भरत, अनिल
भतिज-भतिज वधु	:	मनीष-सोनु
भतिज-भतिजी	:	मिशाल, रुचि, काजोल, इशिता
भुआ-भुडोसा	:	नाजुबाई मोहनलालजी बागरेचा, कमलाबाई भंवरलालजी तातेड़
भतिजी-जमाई	:	निकिता-नविनकुमारजी बाफणा
दोहिता-दोहिती	:	प्रित बाफणा, पहल बाफणा

Firm

NAV NIDHI ENTERPRISES,
Chennai

ROOPAM COLLECTION,
Hyderabad

आगम मंजूषा

भगवान महावीर

रागो य दोसो वि यं कम्म बीयं, कम्म च मोहप्पभवं वदंति।
कम्म च जाई-मरणस्स मूलं, दुक्खं च जाई-मरणं वयंति।।

राग और द्वेष, कर्म के बीज है। कर्म मोह से उत्पन्न होता है। कर्म जन्म-मरण का मूल है। जन्म-मरण को दु:ख कहा गया है।

Attachment and hatred are seeds of Karma. Karma originates from delusion. Karma is the root cause of birth and death. Birth and death are called unhappiness.

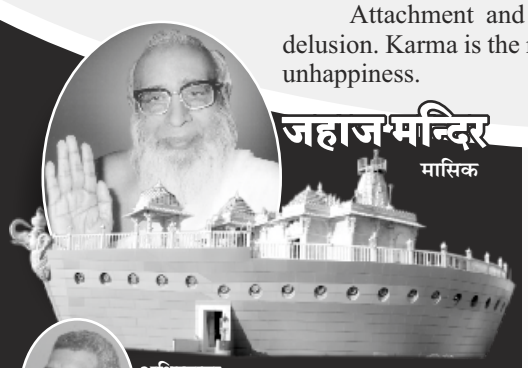

जहाज मन्दिर

मासिक

अधिष्ठाता

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत

श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

वर्ष : 17 अंक : 1-7(संयुक्त) 5 अक्टूबर 2020 मूल्य 20 रू.

प्रधान संपादक :

डॉ. यू.सी. जैन (महामंत्री)

जहाज मन्दिर में प्रकाशित रचनाकारों द्वारा व्यक्त विचारों से सम्पादक / प्रकाशक की सहमति आवश्यक नहीं है

सदस्यता शुल्क

संस्था संरक्षक	:	21,000 रूपये
मानद संरक्षक	:	11,000 रूपये
15 वर्षीय सदस्यता	:	2500 रूपये
12 वर्षीय सदस्यता	:	2000 रूपये
6 वर्षीय सदस्यता	:	1000 रूपये
त्रिवार्षिक सदस्यता	:	500 रूपये
वार्षिक सदस्यता	:	200 रूपये

सदस्यता, विज्ञापन व सहयोग राशि
ICICI की किसी भी शाखा में
SHRI JIN KANTI SAGAR SOORI SMARK TRUST
BANK - ICICI JALORE
ACCOUNT NO. 065301000256
IFSC CODE - ICIC0000653

सम्पर्क सूत्र / प्रकाशक

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट
जहाज मन्दिर
माण्डवला - 343042, जिला-जालोर (राज.)
फोन : 02973-256107, 256192, 9649640451
E-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www.jahajmandir.com, www.jahajmandir.org

अनुक्रमणिका

1. नवप्रभात	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	04
2. दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1	गुम्मीलेरु तीर्थ	05
3. सोलह सतियाँ कथानक	मुनि मनितप्रभसागरजी म.	06
4. कोरोना की उथल पुथल और मेरे अनुभव	गच्छा. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म.	08
5. अधूरा सपना	डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्रीजी म.	11
6. चातुर्मास सूची	संकलन	15
7. जहाज मन्दिर वर्षावास लाभार्थी सूची	संकलन	19
8. जैन दीपावली पूजन विधि	संकलन	26
9. समाचार दर्शन	संकलित	31
10. संरक्षक सूची		42
11. जटाशंकर	आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.	46

सम्पादकीय

कोरोना संक्रमण की समस्या सभी को झेलनी पडी। साधु साध्वियों के चातुर्मास परिवर्तित हुए। उनके विहार भी बदले, चातुर्मास-स्थल बदलने पडे। कई कार्यक्रम स्थगित हुए।

जहाज मंदिर मासिक पत्रिका का अंक भी मार्च के बाद प्रकाशित नहीं हो पाया। मार्च के बाद अक्टूबर महिने का यह अंक प्रकाशित किया जा रहा है।

कोरोना ने पूरा धरातल बदल कर रख दिया। पारिवारिक संबंधों के निर्वाह की समस्या आ गई। लोगों की संवेदनशीलता समाप्त हो गई। चाह कर भी नहीं निभा पाये।

एक परिवार में एक युवा व्यक्ति का स्वर्गवास हो गया। अग्निसंस्कार करने के लिये पारिवारिक व्यक्तियों को भी अनुमति नहीं मिली। उसका एकाकी छोटा पुत्र! उसे कोई संवेदनाऐं देने वाला नहीं। भयंकर शोक की इस घडी में उसे कोई सान्त्वना देकर भोजन कराने वाला नहीं।

एक व्यक्ति विदेश में था। उसकी पत्नी भारत में! जैसे तैसे वह अपने देश पहुँचा। सोचा- घर में आराम से रहूंगा। ज्योंहि उसने अपने घर कदम रखा, उसकी पत्नी ने पियर का रास्ता पकडा। वह जाते हुए बोली- 21 दिन का कोरन्टाइन काल पूरा कर लो, बाद में आउँगी।

एक व्यक्ति शहर से अपने गांव पहुँचा। गांव में उसने अपना घर किराये पर दिया हुआ था। एक अध्यापक परिवार उसमें रहता था। ज्योंहि वह अपने घर पहुँचा कि किरायेदार ने अपना बोरिया बिस्तर समेट लिया। उसने कहा- आप जब तक यहाँ है, मैं दूसरे घर में रह लूंगा। किराये की चिंता मत करना, पर आपके साथ रहूंगा नहीं, कहीं मुझे कोरोना नहीं हो जाये।

ऐसी तो अनगिनत कहानियाँ हैं, कोरोना की।

अब प्रार्थना है परमात्मा से कि जल्दी से पूरे विश्व को कोरोना से मुक्ति मिले।

नवप्रभात

मैं मन के साथ बैठा हूँ। बातें कर रहा हूँ। मन को देख रहा हूँ।

एक गुजराती कवि की लिखी दो पंक्तियाँ मानस में उभरी है–

''थतो केवुं सारूं अगर मन ने होत पग जो।

कदी तो भटकी भटकी ने जात अटकी।।''

इन शब्दों में कवि ने अपने ही नहीं बल्कि सबके अन्तर की असत् कल्पना अभिव्यक्त की है।

शरीर के पाँव है तो वह थकता है। चलता है मगर रुकता भी है। लगातार 24 गुणा 7 वह नहीं चल सकता। क्योंकि उसके पास पाँव हैं, जिसके चलने की सीमा है।

वह कितनी ही ताकत लगाये, औषधि प्रयोग करे, आखिर उसे थकना ही होगा।

उसे विश्राम की अपेक्षा रहेगी। विश्राम करेगा तभी उसके बाद चलने को तैयार हो सकेगा।

पर मन... चलता रहता है, घूमता रहता है...। न दिशा का ठिकाना है, न गति का निर्णय!

मगर थकता ही नहीं। वह लगातार चल सकता है... दौड सकता है... छलांगें लगा सकता है... कुलांचे भरता है... मगर थकता नहीं।

प्रश्न है– क्यों नहीं थकता!

उत्तर है– इसलिये नहीं थकता, क्योंकि उसके पास पाँव नहीं है। पाँव होते तो थकता। पाँव नहीं होने से वह लगातार भटकता है।

मजे की बात यह है कि भटके कितना ही, उसे मिलता कुछ नहीं, वह खाली का खाली ही रहता है।

सात समन्दर की यात्रा करता है, पर भीगता नहीं।

बत्तीस प्रकार के आहार सजाता है, पर तृप्त नहीं होता।

कवि कहता है– कितना अच्छा होता कि मन के भी पाँव होते। कितना भी भटकता, कभी तो अटकता। और जब अटक जाता तो मैं कितना शांत हो जाता... कितना स्थिर हो जाता... कितना एकाग्र हो जाता...

बस! अपने मन को पाँव दो... ताकि अटके।

उसका भटकने से अटकना ही साधना है।

दादावाड़ी दर्शनम् भाग 1

मंदिर-दादावाड़ी परिचय - 7

गुम्मीलेरु तीर्थ

-मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.
- साध्वी डॉ. नीलांजनाश्रीजी म.सा.

गुम्मीलेरु तीर्थ के अधिपति मूलनायक श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जी की श्यामवर्ण प्रतिमा जी गुम्मीलेरु ग्राम में नहर खोदते वक्त भूगर्भ से प्रकट हुई थी। संवत् 2030, वैशाख सुद सातम, रविवार, 28 अप्रैल 1974 को प्रतिमा जी की स्थापना एक छोटा सा गंभारा बनवाकर बड़े ही धूमधाम से की गई थी। फिर परमात्मा के अतिशय से आजू-बाजू के जैन संघों ने मिलकर संगमरमर के श्वेत पाषाण से शिखरबद्ध जिनालय बनवाया और संवत् 2062 जेठ सुदि 4, बुधवार, 31 मई 2006 को अंजनशलाका प्रतिष्ठा महोत्सव सम्पन्न हुआ।

यह तीर्थ विशाखापट्टनम से चैन्नई जाने वाले नेशनल हाइवे रोड पर अवस्थित है। यहाँ पर दादा साहेब श्री जिनकुशलसूरि जी की प्रतिमा विराजमान है। दादा साहेब की प्रतिमा जी 25 इंच की है। मंदिर में पीछे रायण वृक्ष के नीचे आदीश्वर भगवान की प्रतिमा जी एवं भगवान के पगलिये प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ अक्षय तृतीया के पारणे भी होते हैं। साल में छह उत्सव मनाये जाते हैं। यहाँ पर सर्व सुविधायुक्त दो विशाल धर्मशालाएँ एवं विशाल भोजनशाला विद्यमान है। चारों तरफ हरियाली ही हरियाली हैं। इस तीर्थ के अधिष्ठायक देव जागृत हैं, जो भक्तों की मनोकामनाएँ पूर्ण करते हैं। यहाँ पर नागराज समय-समय पर भक्तों को दर्शन देते हैं।

पता :

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ श्वेताम्बर जैन तीर्थ

पोस्ट- गुम्मीलेरु, वाया मंदापेटा, जिला - पूर्वी गोदावारी (आ.प्र.)

दूरभाष - 08855 - 234037, 203060

प्रतिध्वनि

- पहिचान से मिला हुआ काम थोड़े वक्त के लिए रहता है, लेकिन काम से मिली हुई पहिचान उम्र भर के लिए रहती है।
- यदि आप हार मान लेते हैं तो दुनिया की कोई ताकत जीता नहीं सकती हैं। इसलिए कहा भी गया हैं- मन के हारे हार हैं, मन के जीते जीत।
- फर्क इससे नहीं पड़ता कि लोग आपके बारे में क्या सोचते है?फर्क तो इससे पड़ता है कि आप अपने बारे में क्या सोचते है?

सोलह सतियाँ
कथानक
16

विलक्षण वैराग्यवती महासती कौशल्या

मुनि मनितप्रभसागरजी म.सा.

गतांक से आगे...

भयंकर युद्ध...निर्दोष-रक्त से भूमि का रंजित होना.... कुशस्थलपुर का यों पराजय के कगार पर पहुँचना आनन्द का अवसर कैसे? अब तो पहेली पहले से भी अधिक पेचीदा बन गयी। कहीं महाराज विक्षिप्त तो नहीं हो गये, जो ऐसी बहकी-बहकी बातें कर रहे हैं। अमृतप्रभा और अधिक गम्भीर हो उठी।

देवी ! आनन्द के अवसर का निर्णय करने के लिये ही मैं तुम्हारे पास आया हूँ।

निर्णय ! कैसा निर्णय और कैसा अवसर ! अमृतप्रभा बोली ।

अमृते! यद्यपि अयोध्या के अधिपति महाराज दशरथ हमारे शत्रु हैं तथापि उनके प्रज्ञापूर्ण चातुर्य, शारीरिक सौष्ठव, नीतिपूर्ण युद्धपद्धति, अद्वितीय प्रतिभा कौशल से अत्यन्त प्रभावित हुआ हूँ।

हम इन दिनों पुत्री अपराजिता के लिये योग्य वर की तलाश में थे। मैं सोचता हूँ कि अपराजिता का पुण्य-साम्राज्य स्वयं सामने से चलकर आया है। युवराज दशरथ बुद्धि और बल के खजाने हैं तो अपराजिता संस्कार, शील और सुन्दरता की प्रतिमूर्ति। दोनों की जोड़ी त्रिभुवन में प्रशंसनीय बनेगी। तुम्हारा क्या विचार है देवी ! मेरे पास समय नहीं है, शीघ्र ही निर्णय कर लो, जो करना है।

जरा चौंकती और गम्भीर होती हुए महारानी अमृतप्रभा ने कहा-देव! अपनी प्राण-प्यारी पुत्री को शत्रु के हाथों सौंपना क्या गलती नहीं होगी? क्या लोग नहीं कहेंगे कि राज्य के बदले में सम्राट् सुकौशल ने अपनी पुत्री को बेच दिया। इससे कुशस्थलपुर के पूर्वजों की गौरवपूर्ण परम्परा एवं निर्मल प्रतिष्ठा को धक्का नहीं लगेगा? कहते हुए अमृतप्रभा ने अपनी प्रश्नसूचक निगाहें महाराज के मुख पर रख दी।

देवि अमृते! यहाँ सौदे की बात थोड़े ही ना है। यह सम्बन्ध सौदा तब कहलाता, जब अपराजिता का हाथ मजबूरी से युवराज दशरथ के हाथों में देता। यह तो मेरा अपना स्वतन्त्र निर्णय है। चाहे जीत हो या हार, मैं तो उन्हें उपहार के रूप में अपराजिता को अर्पण कर रहा हूँ।

अमृतप्रभा सम्राट् सुकौशल की सुझबुझ पर फिदा हुए बिना न रही। उसने इस मधुर सम्बन्ध पर स्वीकृति की मुहर लगा दी। एक निर्णय ने रणभूमि का वातावरण बदल दिया ! एक पल पहले जहाँ हजारों बेकसूर प्राणियों का रक्त बह रहा था, वहीं अब सैकड़ों शहनाईयों का संगीत का फूट पड़ा। युद्ध-मण्डप विवाह मण्डप में बदल गया।

युवराज दशरथ को कुशस्थलपुर की प्रजा ने बधाई की पुष्पवर्षा करते हुए बधाया। दशरथ स्वयं अपराजिता के साहचर्य की सुगंध से महक उठे। उन्होंने पट्टरानी का गरिमापूर्ण पद देकर अपने हार्दिक अपनत्व को अभिव्यक्त किया। गुणों से छलकता अपराजिता का व्यक्तित्व अयोध्या का सुन्दर सम्मान बन गया।

पक्षी की कुहुक से सुकौशल पुत्री कौशल्या अपने स्मृति-संसार से बाहर लौटी तो अपने नितरते सौन्दर्य और आभा को दर्पण में देख जैसे संकोच से शरमा गयी।

चारों तरफ हो रहा शहनाई वादन उसके कानों में मधुर रस घोलता प्रतीत हो रहा था। आज नरेश दशरथ की पट्टरानी राजमाता का दिव्य पद प्राप्त करेगी। इतने में उसे कुछ दिन पूर्व घटित घटना याद हो आयी। उसका मन जैसे विरक्त योगिनी की भाँति वैराग्य के उपवन में विचरण करने लगा-अहा! प्रसन्नता की अमी से झरती तपस्विनी काया ! आँखों में संवेग की मस्ती ! शब्दों में वैराग्य के मोती ! कोमल देह पर छलकती साधना की रश्मियाँ!!

नरेन्द्र दशरथ राज परिवार के साथ मुनीन्द्र की चर्चा-प्रशंसा सुन उनके दर्शन-लोभ का संवरण नहीं कर पाये और दर्शन के लिए प्रस्थित हुए।

प्रथम पल में ही उनका पवित्र आभामण्डल प्रभावित कर गया। वाणी में क्या जादूभरा था। प्रवचन क्या

था, जैसे पीयूष का अनुपम-पान ! समस्त आवरणों को छेद-भेद कर आत्मा के हर अणु को मधुर सुवास से भर गया।

एक घटिका....दो घटिका....तीन घटिका....कब व्यतीत हुई, पता ही नहीं चला।

निर्ग्रन्थ प्रवचन का सार-संक्षेप कौशल्या के हृदय-पटल पर उभर आया।

राजन्! ये सारे भोग-उपभोग अन्ततोगत्वा दु:खकर हैं। इन मिथ्यासुखों की प्राप्ति एक भव में तो क्या, अनन्त भवों तक हो, चाहे देवेन्द्र-नागेन्द्र-नरेन्द्र के करोड़ों-अरबों-संख्य-असंख्य भव मिल जाये तब भी असंभव है।

जैसे एक प्रहार हुआ। दशरथ जाग गये भोगों की नींद से। नहीं....नहीं....! मुझे वैराग्य के उपवन में प्रवेश करना है। ये मुकुट....राजपाट....साधनों की विपुलता.... आत्मसुख-संयमसुख के सम्मुख ना कुछ हैं। तुच्छ, हीन और नीरस हैं। अन्तर बदला....मन की दिशा बदली.... संसार कारागृह की भाँति कचोटने लगा। तत्क्षण उन्होंने प्रव्रज्या की इच्छा अभिव्यक्त कर दी।

कौशल्या से न कुछ कहते बना, न सहते बना!

कैकयी और सुमित्रा भी जैसे किंकर्त्तव्यविमूढ बन गयी!

राजपाट का त्याग यानि राम का राज्याभिषेक !

आज वह शुभ मुहूर्त्त आ गया है।

गलियों का रंग बदल गया है।

ढोल-नगारे...तोरणद्वार...दीपमालाएँ...पुष्पवृष्टि...इत्र की सुवास...शहनाई वादन...कुंकुम का छिड़काव...! पूरी नगरी दुल्हन की तरह सज चुकी है।

सकल प्रजा हर्षित...भाव विभोर है। सूर्योदय के साथ ही विशाल जनसमूह ने राजमहल के निकटस्थ उस भव्य पाण्डाल ओर कदम बढ़ा दिये हैं, जहाँ अयोध्या के गौरव श्रीराम का राज्याभिषेक होना है। आज एक स्वर्णिम पन्ना जुड़ रहा है रघुकुल के गरिमामय इतिहास में।

राम का राज्याभिषेक होगा और दशरथ सारे बन्धनों के पाश को तोड़ निर्बंध की ओर बढ़ चलेंगे। न केवल दशरथ अपितु कैकयीपुत्र भरत भी। संसार के सुखों की मृग-मरीचिका से मुक्त होने को तड़फ-बिलख उठी है उनकी अन्तर-आत्मा। कैकयी महाराज दशरथ के संयम-पथ स्वीकार के आघात को तो झेल ही नहीं पायी थी कि भरत के साधना के राजपथ पर आरूढ़ होने के परिपक्व निवेदन ने दूसरा झटका दिया।

वह जानती थी, महाराज दशरथ के निर्णय को नहीं बदला जा सकता है तब फिर उनके साथ ही संन्यास के लिये उत्कंठित भरत की आत्मा को कैसे रोका जा सकेगा? वह तो मेरा प्राणाधार है। उसके बिना मैं कैसे जी पाऊँगी? भरत बिना ये भरा पूरा महल भी श्मशान जैसा लगेगा। छप्पन भोग नीरस एवं बासी लगेंगे। कोमल मखमली शय्या भी शूल की तरह चुभेगी।

नहीं....नहीं...! भरत को दीक्षा नहीं दे सकती। मेरी आँखों का तारा....मेरे हृदय का हार! मैं तुझे किसी भी कीमत पर दूर नहीं होने दूंगी। रात इन्हीं सोचों में बीत जाती। उसे न दिन में चैन था, न रात में नींद। भरत के विरह के दु:ख में भूख-प्यास भी मिट गयी।

उसकी कोमल-मातृत्व से परिपूर्ण संवेदनाएँ दु:ख और चिन्ता से टकराकर मृतप्राय: हो गयी। उसने अनेक बार स्वयं को समझाने-मनाने का यत्न भी किया। वह बखूबी जानती थी कि साधना में जो आनंद और प्रसन्नता है, उसकी इन राजमहलों, कुटुंब-कबीलों और सुविधाओं की भरमार से संत्रस्त जिन्दगी में झलक भी नहीं मिल सकती। पर मोहनीय कर्म की सघनता ने उसे भरत के प्रति सम्मोहित कर दिया कि वह भरत के बिना जीना भी नहीं सोच सके।

अनन्तोगत्वा कैकयी ऐसा कोई अवसर ढूंढने लगी, जिससे भरत को राजप्रासाद में रहने के लिए बाध्य होना पड़े।

बहुत सोचा, विचारा, चिन्तन किया पर कोई भी ऐसा विकल्प हाथ न लगा, जो उसकी खिन्न आत्मा की उद्विग्नता मिटा सके। उदासी, खिन्नता और भरत के भावी विरह का दु:ख जहर बनकर दिलोदिमाग को जख्मी करने लगा। चिन्ता के विष ने चिन्तन, रूचि, आशा और खुशी को अत्यन्त रूग्ण बना दिया।

राज्याभिषेक के दिन ज्यों ज्यों करीब आ रहे थे, त्यों त्यों कैकयी की मनोव्यथा बढती जा रही थी। दशरथ, कौशल्या, सुमित्रा, सुप्रभा, श्रीराम, सभी ने कई बार उसके चिन्तित मुख और रूग्ण शरीर को देखकर प्रश्न भी किया पर कैकयी स्पष्ट शब्दों में अपनी व्यथा बता न सकी।

(क्रमश:)

आत्म
मंथन

कोरोना की उथल पुथल और मेरे अनुभव

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

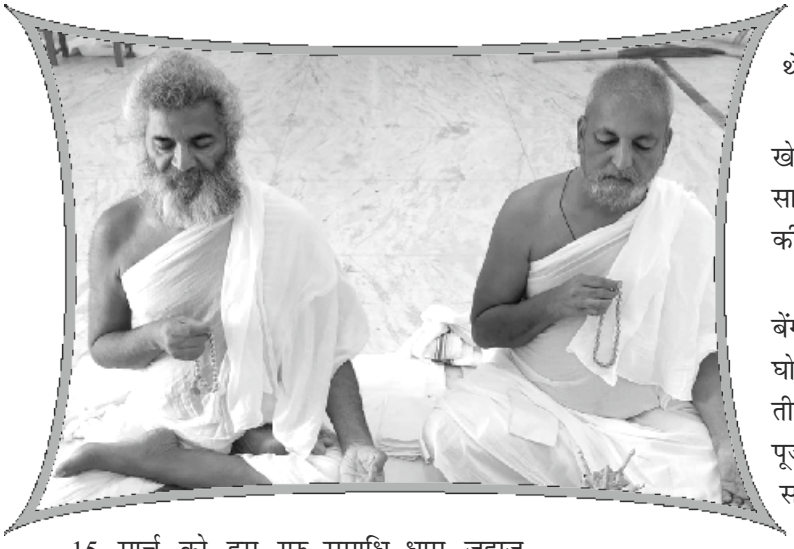

15 मार्च को हम गुरु-समाधि-धाम जहाज मंदिर पहुँचे थे। रुकने का भाव आगे के लम्बे विहार के कारण सात दिन का था। 22 या 23 मार्च को विहार करना था। दुठारिया, गजमंदिर-केशरियाजी होते हुए आगे बढने का भाव था।

पर योग अचानक बदला। कोरोना की सामान्य उपस्थिति ने धीरे-धीरे विकराल रूप लेना शुरु किया। लॉकडाउन लगा। चिंताओं का आगमन शुरु हुआ। लम्बा विहार... दिन कम... कैसे पहुँचेंगे। पहले लॉकडाउन की पूर्णाहुति की प्रतीक्षा की। मन को आश्वस्त किया- विहार थोडा लम्बा करना होगा, पर पहुँच जायेंगे। बीच में क्षेत्रों में रुकने की भावना को स्थगित करना होगा। प्रतिदिन विहार होगा तभी पहुँचने की संभावना साकार होगी।

दूसरे लॉकडाउन की घोषणा ने हमारी आशाओं पर तुषारापात कर दिया। संभावनाऐं धूमिल हो गई। अब स्पष्ट महसूस होने लगा कि विहार संभव नहीं होगा। महामारी के वातावरण में विहार कर साधुओं के जीवन को खतरे में डालना जरा भी व्यावहारिक न था, भले मुनिगण विहार के लिये आज्ञांकित थे।

मुझे याद आया वह दिन जब खेतासर में हमने अपने तथा समुदाय के साधु साध्वियों के चातुर्मास की घोषणा की थी।

मन कितना उत्साहित था! बेंगलोर चातुर्मास की आगार सहित घोषणा करते हुए चित्त परम प्रसन्न था। तीन वर्षों के बाद यह चातुर्मास पूजनीया माताजी म. के श्रीचरणों में संपन्न होगा। उनका आशीर्वाद प्रतिदिन प्राप्त होगा।

हमारी प्रसन्नता का कारण एक और भी था। क्योंकि तीन योग्य मुमुक्षुओं की भागवती दीक्षाऐं निश्चित कर ली गई थी। एक दीक्षा अमित बाफना की गदग में होनी थी और दो दीक्षाऐं रीतेश गडा एवं राजेश धोका की रायचूर में!

मुमुक्षुओं की वर्षों की अभिलाषा पूर्ण होने का मुहूर्त्त निकल चुका था। हमारा सारा समुदाय प्रमुदित था, क्योंकि साधुओं में अभिवृद्धि जो हो रही थी। सारा कार्यक्रम चातुर्मास के पूर्व निश्चित कर लिया गया था। मई के तीसरे सप्ताह में गदग तथा जून के प्रारंभ में रायचूर! प्रवेश जुलाई में करने का भाव संकल्पित था। इन मुहूर्त्तों के लक्ष्य से संबंधित साधु साध्वियों का विहार प्रारंभ हो चुका था। पूजनीया माताजी म., बहिन म. आदि सभी कृष्णगिरि पहुँच गये थे।

गणिनी प्रवरा श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. पूर्णप्रभाश्रीजी आदि ठाणा ने नंदुरबार से आगे विहार यात्रा का प्रारंभ कर दिया था। गणिनी प्रवरा श्री सुलोचनाश्रीजी म. की शिष्या साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी आदि ठाणा ने पालीताना से रायचूर की दिशा में विहार-निर्णय को स्वर दिया था।

पर नियति के पन्नों पर कुछ अलग ही लेख लिखा था।

जिस समय मैं अपने बेंगलोर चातुर्मास की घोषणा कर रहा था, उस समय मुझ पर नियति जैसे हँस रही थी। व्यंग्यात्मक शब्दों में जैसे बोल रही थी- घोषणा कितनी ही कर दो... पर आखिर होगा तो वही जो मैं चाहुंगी! और मुझे पता है कि आने वाला समय किन घटनाओं का साक्षी बनेगा... और किनका नहीं!

नियति ने पुरुषार्थ पर जैसे स्थगनादेश जारी कर दिया। क्या होगा, हम केवल कल्पना ही कर सकते थे। क्या होगा, इसकी पूर्ण व सच्ची जानकारी तो केवल नियति के पास थी। और नियति की विशेषता है कि वह कभी भी भविष्यवाणी नहीं करती। वह करके दिखाती है। इसलिये वह निश्चिन्त है।

इधर दबे पाँव भारत में आये कोरोना ने शीघ्र ही अपने पाँव पसारने प्रारंभ कर दिये। प्रारंभ में ऐसा लगा था कि सुरक्षा हेतु लॉकडाउन जैसे मजबूत कदम जो उठाये गये हैं, परिणामस्वरूप 21 दिनों की आन्तरिक साधना के बाद इसकी विदाई हो जायेगी।

संयोग से ब्रह्मसर की ओर विहार करते हुए मेरे लघु गुरु बन्धु आचार्य जिनमनोज्ञसूरि अपने शिष्य मुनि नयज्ञसागरजी के साथ दो दिन बाद जहाज मंदिर आ गये थे। दो दिन उन्हें रुकना था। पर लॉकडाउन को धन्यवाद देना होगा जिसके कारण उनको भी डेढ माह जितना समय गुरु-समाधि तीर्थ के परम पावन सानिध्य में रहने का आनंददायक अवसर मिला।

पर इसे जनता की लापरवाही कहें या कोरोना की मजबूती या फिर नियति की लीला! दूसरे और तीसरे लॉकडाउन के परिणामत: भी कोरोना को रोक पाना संभव नहीं हुआ।

आखिर हमें नियति के संदेश को स्वीकार करना पडा। हाँलाकि हम अपने आपको सौभाग्यशाली मानते हैं कि जहाज मंदिर से विहार करने से पूर्व ही ये सारी स्थितियाँ प्रत्यक्ष हो गई। यदि विहार हो जाता और बीच रास्ते में लॉकडाउन जैसी स्थितियों का सामना करना होता, तो समस्याओं का साक्षात्कार बहुत बडा होता।

यहाँ तो गुरु महाराज विदेह रूप में प्रत्यक्ष बिराजमान है। जैसे उनकी ही कृपा बरस रही थी। जैसे उन्होंने नियति के भविष्य के पन्ने पढ लिये थे और हमारे कदमों को चितलवाना से जहाज मंदिर की ओर बढाने का आदेश दिया था। जैसे यहाँ आने तक लॉकडाउन जैसी स्थितियों को रोका था।

गुरु धाम में रहने, रुकने के आनंद की तो कल्पना ही नहीं हो सकती। तन कहीं पर भी हो, मन तो सदा यहाँ की ही ख़्वाहिश करता है।

कोरोना के कारण केवल हमारे समुदाय में नहीं, अपितु संपूर्ण जिनशासन में चातुर्मास की व्यवस्थाओं में उथल-पुथल हो गई। अपवाद स्वरूप दोष-युक्त आहार पानी को स्वीकार करना पडा।

हे प्रभो! अब तो इस बीमारी से मुक्ति दो। ऐसी स्थितियों को जीवन में पहली बार देखना और भोगना पडा है। स्वप्न में भी किसी ने ऐसी कल्पना नहीं की होगी कि भारत ही नहीं संपूर्ण विश्व में इस प्रकार की स्थिति आ सकती है। सारे ज्योतिषियों की गणना अस्त-व्यस्त हो गई। भविष्यवाणियाँ धरी की धरी रह गई।

कुछ समय तो मन में हलचल रही। पर बाद में स्थितियों के साथ मन ने समझौता कर लिया। फिर परिस्थितियों के अनुरूप निर्णय लेने की मानसिकता बनी। बैंगलूरु चातुर्मास में मेरे साथ मुनि मयंकप्रभ, मुनि मेहुलप्रभ, मुनि मयूखप्रभ थे। विहार पथ में तीन मुनि-दीक्षा होनी थी। कुल सात ठाणा के चातुर्मास का भाव बेंगलूरु में था। वे तीन दीक्षाऐं तो अब आगे होगी। प्रार्थना है गुरुदेव से कि उनकी चारित्र-ग्रहण की भावना शीघ्र साकार हो।

हम चार मुनि यहाँ थे ही। जहाज मंदिर ट्रस्ट मंडल वर्षों से आश लगाये था कि एक चातुर्मास जहाज मंदिर में हमारा हो...। इस वर्ष परिस्थितियों ने ट्रस्ट मंडल को आशान्वित कर दिया। हमने वातावरण के अनुरूप उनकी भावना को आश्वस्त किया। आचार्य जिनमनोज्ञसूरि जिनका चातुर्मास धोरीमन्ना था। उनका चातुर्मास यहाँ होने से सामूहिक चातुर्मास का वातावरण निर्मित हुआ। लम्बे समय से मेरी और उसकी भावना थी कि एक चातुर्मास साथ में हो। मोकलसर में सन् 1990 में चातुर्मास साथ में हुआ था। उसके बाद साथ चातुर्मास का योग नहीं बना था। 30 वर्षों बाद चातुर्मास साथ हो रहा था।

मुनि मनितप्रभ व महितप्रभ के चातुर्मास की घोषणा सूरत के लिये हुई थी। हाँलाकि उसकी भावना साथ में ही

चातुर्मास करने की थी। पर लम्बे और उग्र विहार की दशा में सूरत निश्चित किया था। जब कोरोना के कारण उसे यहाँ साथ में चातुर्मास करने का आदेश दिया तो स्वाभाविक रूप से दोनों मुनियों के हृदय में परम आनन्द की लहर छा गई।

आसपास विचरण कर रही साध्वियों से भी पत्राचार हुआ। पारस्परिक चर्चा विचारणा का परिणाम यह हुआ कि कोरोना के वातावरण के कारण जो स्थितियाँ बनी हैं, उसे देखते हुए इस चातुर्मास को सामूहिक स्वाध्याय का प्रेरक निमित्त स्वरूप प्रदान किया जाये। यह उसी का परिणाम है कि प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा 8, साध्वी विमलप्रभाश्रीजी ठाणा 14, साध्वी कल्पलताश्रीजी ठाणा 7 आदि विशाल साध्वी मंडल का चातुर्मास यहाँ अध्ययन, वांचना, स्वाध्याय आदि विशिष्ट गतिविधियों के साथ गतिमान् है।

कोरोना महामारी के कारण समस्याओं का अंबार रहा। हाँलाकि साधु साध्वियों के लिये महामारी का यह काल सकारात्मक वातावरण का प्रेरक रहा।

अन्य समय में श्रावकों की भीड़, विहार की थकान, प्रवचन/शिविर आदि की व्यस्तता आदि के कारण निजानुभव के लिये पूरा समय नहीं दे पाते थे। लेकिन यह समय उनके लिये स्वर्णिम रहा। मैं अपना अनुभव कहूं तो यह समय पूरा स्वाध्याय व जाप को समर्पित हो गया।

तत्त्वार्थ सूत्र, गुणस्थानक, वैराग्य शतक, प्रमाण मीमांसा आदि ग्रन्थों के सामूहिक स्वाध्याय का अनूठा वातावरण बना।

जहाज मंदिर में चल रहे सामूहिक चातुर्मास में साधु साध्वियों ने उक्त ग्रन्थों के अलावा कर्मग्रन्थ, दंडक, तर्क संग्रह, संस्कृत पहली, दूसरी बुक, संस्कृत वांचन आदि के पठन-पाठन का लाभ लिया।

लगता था जैसे कोरोना ने आकर हमसे कहा हो- जब देखो तब तुम कामकाज में रचे पचे रहते हो, अपना काम कब करोगे! लो, अब जाओ! अब कोई काम नहीं! विहार नहीं, भ्रमण नहीं, लोगों से वार्तालाप नहीं, मिलना जुलना नहीं, बस! पुस्तक लेकर बैठ जाओ, परमात्मा से मिलो, पूर्वाचार्यों के जीवन-कथ्य का साक्षात्कार करो, पुरानी गाथाओं का पुनरावर्तन करो, नई गाथाऐं याद करो, लेखन के अधूरे काम पूरे करो, ध्यान करो, भक्ति करो, भजन में डुबकी लगाओ!

अब कोई बहाना नहीं चलेगा! स्वाध्याय योग्य अनुकूलता की व्यवस्था मैं करूँगा! किसी को तुम्हारे पास आने नहीं दूंगा... कोई तुम्हें छू नहीं पायेगा! बस! तुम रम जाओ अपने में!

सचमुच आत्मानुभव के लिये कोरोना जैसे वरदान बनकर आया। पठन पाठन का अनूठा लाभ इस काल में मिला।

इसमें पूज्य गुरुदेवश्री की इस समाधि-भूमि ने सत्त्व-दान की भूमिका निभाई। गुरुदेव के अदृश्य आशीर्वाद के बिना ऐसा होना संभव ही नहीं था।

कोरोना ने शारीरिक दूरियाँ, मुख व नासिका पर वस्त्र का प्रयोग, गर्म जल का पान, बाजार के खाद्य पदार्थों का त्याग, अनावश्यक बाहर भ्रमण का त्याग आदि कई उपयोगी उपक्रम लोगों को सिखा दिये। जो कार्य धर्माचार्यों के सघन उपदेश से नहीं हो पाया, वो कार्य कोरोना ने कर दिखाया।

पर इस महामारी ने जीवन अस्त व्यस्त कर दिया। पता नहीं, ऐसी स्थिति कब तक चलेगी! और कब तक लोग अपने घरों में कैद रहेंगे।

और तो और, परमात्मा के दर्शन तक नसीब नहीं। पूरे देश में शराब की दुकानें खुल गई, बाजार खुल गये, पर मंदिरों के द्वार खोलने पर प्रतिबन्ध है। यहाँ तक कि पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व जैसे परम पवित्र और आराधना के महामहोत्सव-काल में भी मंदिरों पर प्रतिबन्ध जारी रहा।

ऐसे विषम, अकल्पित और संदेहात्मक भविष्य के वातावरण में वीतराग परमात्मा से... दादा गुरुदेव से... शासन देव से प्रार्थना करते हैं कि जल्दी ही इस कोरोना को विदा करें। ताकि पुनः भारत में सर्वत्र धर्म आराधना का खुशनुमा माहौल बने।

धारावाहिक
कथा
14

अधूरा सपना

प्रमोद गुरु चरणरज डॉ. साध्वी विद्युत्प्रभाश्री जी म.

(गतांक से आगे)

युवराज साथियों सहित भवन से सुरक्षित निकलने में यद्यपि कामयाब हो गया पर दुर्भाग्य से भागते हुए युवराज का पांव पीछे से किसी ने खिंच लिया। युवराज ने अपना पांव तो मुक्त करवा लिया पर पॉव की मोजडी उसके हाथ में आ गयी। युवराज समझ गया- आज की यह चोरी उसके जीवन में खतरा अवश्य बनेगी। नगर सेठ के पूरे परिवार का जाग जाना सामान्य बात नहीं है। फिर भागते हुए मेरी मोजड़ी भी उनके हाथ लग गयी। यह तो चीख चीखकर मेरी उपस्थिति को प्रमाणित करेगी।

शुभ यही हुआ कि मैं और मेरे साथी कोई पीछे नहीं रहा।

पुष्पचूल एवं उसके साथी अलग-अलग दिशाओं में भागते जा रहे थे। पुष्पचूल ने जहां अपना घोडा बांधा था, वहां से घोड़ा लेकर वह भी इधर-उधर गलियों से होता हुआ राजमहल की ओर भागा। उसका घोड़ा जितनी तेजी से भाग रहा था, दिमाग उससे भी तेजी से भाग रहा था।

चिंता से उसका दिमाग सुन्न हो रहा था। उसने स्वयं को आश्वस्त करने का प्रयास भी किया। स्वयं को समझाया- मैं व्यर्थ ही कल्पित कल्पनाओं से भयभीत हो रहा हूँ। न मुझे किसी ने देखा है न मेरे साथियों को। फिर मैं क्यों अपनी मानसिक कल्पनाओं के ताने-बाने बुनकर उनमें स्वयं को उलझा रहा हूँ।

अगर कहीं किसी ने मुझ पर शक भी किया तो मेरी पत्नी मेरा सबसे बड़ा प्रमाण है। वह स्पष्ट कहेगी कि हमने अपनी नई जिंदगी का प्रारंभ करने के लिए उपवन में साथ-साथ रात बितायी है।

युवराज सुरक्षित राजमहल में पहुंच गया। आभूषणों का झोला उसके पास था। वह झोला युवराज के लिए बहुत बड़ी समस्या बन गया। अगर आभूषणों को सुरक्षित स्थान पर नहीं छुपाया तो ये आभूषण ही उसे फांसी के फंदे तक पहुंचाने के लिए पर्याप्त होंगे। वह क्या करे? इन्हें कहां रखे? और कोई व्यवस्था न देख उसने अपने पलंग पर ही बिस्तर के नीचे छुपा दिया।

आभूषणों को व्यवस्थित करने का भरपूर प्रयास किया फिर भी उतना भाग स्पष्टत: उभर कर हर किसी का ध्यान आकृष्ट कर सकता था पर अन्य कोई उपाय न था। वह पुन: उपवन में गया और निद्राधीन पत्नी के समीप लेट गया।

पूरी रात सोया नहीं था अत: उसने भरपूर प्रयत्न किया कि कुछ देर सो जाय ताकि उसका चेहरा तरोताजा लगे पर चिंताओं का जाल उसके चारों ओर इतना छा गया कि वह सो नहीं पाया। कभी मोजडी उसे भयभीत करती तो कभी उभरा हुआ शय्या का भाग! उसके माथे की नसें जैसे फटने लगी।

वह बैठ गया। वह अपने से ही डर गया। घबराहट ज्यादा बढ़ गई। उसने पत्नी को भी जगा दिया। युवरानी उठ बैठी। अरे! यह क्या? आप इतने घबराये हुए क्यों है? क्या हुआ? क्या नींद नहीं आयी? मुझे क्यों नहीं जगाया? युवराज ने कृत्रिम मुस्कान चेहरे पर फैलाते हुए कहा- तुमने तो उठते ही प्रश्नों की झडी लगा दी है। गहरी नींद में अचानक एक डरावना दृश्य देखकर मैं उठ गया था।

कोई बात नहीं, आप कुछ देर लेट जाओ। मैं आपका मस्तक सहलाऊंगी तो आपको नींद आ जायेगी।

युवराज की बैचेनी कम होने का नाम नहीं ले रही थी। उसने उठते हुए कहा-देखो! सूर्य के स्वागत में प्राची रानी ने कितनी सुंदर लाल साड़ी धारण की है। सूर्य देवता बस पधारने

ही वाले हैं। पक्षियों की चहचहाहट कानों को कितना सुन्दर संगीत प्रस्तुत कर रही है। तुम तैयार हो आओ, मैं चलता हूँ।

अरे, पर आप रुकिये न! मैं भी चल ही रही हूँ। तुम डरो नहीं। मैं कहीं भाग नहीं रहा हूँ। अपने महल में ही जा रहा हूँ। तुम परिधान व्यवस्थित कर वहीं आ जाओ। वहाँ से साथ ही प्रभु पूजा और नाश्ते के लिए जायेंगे, कहते हुए युवराज लम्बे-लम्बे डग भरता महल की ओर प्रस्थित हो गया। युवरानी भी अपना परिधान व्यवस्थित करके पीछे-पीछे चल पडी।

सपत्नीक युवराज महल के द्वार पर पहुंचे, उससे पूर्व महाराज रथ में बैठकर बाहर जाते हुए नजर आये। युवराज ने झुककर प्रणाम किया, परंतु महाराज का ध्यान तो समीप बैठे महामंत्री से बातचीत में व्यस्त था।

युवराज ने द्वार-रक्षक को पूछा- क्या बात है महाराज इतनी जल्दी कहाँ पधारे है?

द्वार-रक्षक ने प्रणाम करते हुए कहा- महाराज नगर सेठ के भवन पर पधारे हैं।

नगर सेठ का नाम आते ही युवराज चौंका। चोर की दाढ़ी में तिनका वाली कहावत युवराज पर चरितार्थ हो रही थी। उसके भीतर का चोर तुरंत मुँह खोलकर खड़ा हो गया।

उसने पूछा- क्या हुआ नगर सेठ को? द्वारपाल ने सविनय उत्तर देते हुए कहा- असंभव घटना हुई है युवराज! युवराज नगर सेठ की हवेली में पहली बार चोरी हुई है।

क्या बात करते हो! नगर सेठ की हवेली पर तो पूरा पहरा है, उसे भेदकर जाना असंभव लगता है। जरूर कहीं भ्रम हुआ होगा?

नहीं युवराज! चोरी शत प्रतिशत हुई है। सारा भंडार बिखरा हुआ है। महाराज को ज्योंहि सूचना मिली, स्वयं स्थिति का निरीक्षण करने के लिए पधारे हैं।

ओ... हो... ! आश्चर्य व्यक्त करते हुए पुष्पचूल भवन की सीढियाँ चढने लगे। युवरानी ने भी अचरज व्यक्त करते हुए कहा- नगर सेठ के घर चोरी जनता में भय पैदा कर सकती है। जब नगरसेठ का भवन भी सुरक्षित नहीं है तो आम जनता की क्या स्थिति होगी?

युवराज बिना जवाब दिये ही कक्ष में पहुंच गया। उसका मस्तिष्क तनावग्रस्त था। क्योंकि उसने आभूषणों की पोटली पर्यंक पर चद्दर के नीचे छिपायी अवश्य थी पर उभरा हुआ वह स्थान पहली ही नजर में किसी का भी ध्यान खींच सकता था। युवराज जल्दी से जल्दी उस माल को वहाँ से हटाकर स्वयं और माल दोनों को सुरक्षित करना चाहता था।

युवरानी कक्ष में उपस्थित थी। युवराज चाहकर भी आभूषणों का वह झोला वहां से हटा नहीं पाया। चिन्तित चेहरा देखकर युवरानी भी असमंजस में पड गयी। कल शाम तक बेहद प्रसन्न पर रात से अचानक ही इतने खिन्न क्यों हैं?

उसने निकट आकर माथा सहलाते हुए कहा- क्या बात है स्वामी! आप अपनी बैचेनी मुझे बताइये, शायद मैं कोई समाधान दे सकूं।

अरे! नहीं-नहीं! मेरी उदासी मेरे कारण नहीं पर राजकीय उलझन के कारण है। नगर सेठ के घर चोरी होना हमारे मुँह पर तमाचा है। बस यही बात मेरे मन मस्तिष्क को अस्वस्थ बना रही है।

युवरानी एकाध घटिका पर्यंत युवराज के साथ बात कर स्नान के लिए चली गयी। युवराज एकांत देखकर प्रसन्न हुआ। वह द्वार बंद करना ही चाहता था कि बाहर से कोटवाल एवं दो सैनिक आते हुए दिखाई दिये। युवराज को लगा- आज समय ठीक नहीं है। कोटवाल एवं सैनिकों का इस समय आना अशुभ संकेत है। इतने में कोटवाल ने मस्तक झुकाते हुए कहा- युवराज! महाराज आपको मंत्रणा कक्ष में बुला रहे हैं।

युवराज ने कहा- आप जाओ। हम अभी स्नानादि से निवृत्त होकर पहुँच ही रहे हैं। कोटवाल ने दबाव पूर्वक कहा- कुछ ही पलों की बात है। महामंत्री आदि भी उपस्थित है। मात्र आप ही शेष है। जल्दी पधारें।

युवराज दायित्व से बंधा था। अधिक इंकार संशय पैदा

कर सकता था। उसने सोचा- मैं पूरी रात कुंज में था, इसका प्रमाण स्वयं युवरानी है। मुझे डरने की क्या जरूरत है। बस ये झोला ही मेरा सरदर्द बना हुआ है। पर जाना मजबूरी है। वह उनके साथ चल पड़ा।

मंत्रणाकक्ष में सभी राजदरबारी उपस्थित थे। युवराज को आते देखकर सभी खड़े हो गये।

युवराज ने महाराजा को प्रणाम किया और आदेश पाकर अपने स्थान पर बैठ गया। महाराज सिर झुकाये अपने विचारों में डूबे थे। महामंत्री ने स्थिर एवं गंभीर मुद्रा में अपनी आंखों को युवराज की आंखों में पिरोते हुए पूछा- क्या आप जानते हैं कि नगर सेठ के भवन में रात्रि को चोरी हुई है?

युवराज ने भी उतनी ही गंभीरता से कहा- हाँ! असंभव दुर्घटना हुई है। इतने पहरेदारों के बीच चोरी के इरादों से जो भी प्रविष्ट हुआ होगा जरूर कोई खतरनाक दुस्साहसी रहा होगा! क्या कोई चोर की पहचान मिली!

चोर की पहचान नहीं मिली पर चोर का एक साथी पकड़ में आ गया है। सभी को शंका है कि वह तुम्हारा ही साथी है। कल रात तुम कहाँ थे? अभी तक मौन बैठे महाराज ने तीखे स्वर में पूछा?

महाराज की जय हो! मेरे बारे में आपका शंकित होना स्वाभाविक है। क्योंकि मेरा अतीत ऐसा था। परंतु मैं कल रात बाग के कुंज में ही था। आप चाहें तो युवरानी से भी पूछ सकते हैं।

क्या युवरानी की नींद लगने के बाद तुम्हारा अपनी योजनानुसार वहाँ से गायब होना असंभव है?

नहीं... नहीं... । मैं यह नहीं कहना चाहता हूँ पर आप किस आधार पर मुझ पर यह आरोप लगा रहे हैं। युवराज ने निर्भीक होकर कहा।

अभी तक महाराज भीतर से घबराए हुए थे पर जब युवराज को इतना निडर देखा तो उन्हें प्रसन्नता हुई कि जरूर इस प्रकरण से युवराज अलिप्त है। यद्यपि उन्होंने यह तय कर लिया था कि उनकी न्याय प्रक्रिया में कोई भी संबंध कितना भी महत्वपूर्ण क्यों न हो, बाधक नहीं होगा।

महाराज ने पुनः पूछा- चोरी के स्थान से भागते हुए चोर की मिली पाँव की मोजडी तुम्हारी ही बतायी जा रही है।

मेरे पाँव की मोजडी कुछ दिन पहले चोरी हुई थी। संभवतः मुझे आरोपित करने के लिए उसने चोरी में इसका प्रयोग किया होगा। युवराज की आवाज में दृढ़ता और बढ़ गयी थी।

युवराज अपनी बातों से महाराज को आश्वस्त एवं स्वयं को बेगुनाह प्रमाणित कर ही रहा था कि इतने में कोटवाल दौडता हुआ आया और कहा- क्षमा करें महाराज! चोरी का माल युवराज के कक्ष में प्राप्त हुआ है। देखिये! यह आभूषणों की पोटली, कहते हुए उसने अपने हाथ का थैला महाराज के समक्ष रख दिया।

पर तुमने इसे कहाँ से बरामद किया! क्रोध और पीडा से हाँफते हुए महाराज ने पूछा।

मैं युवराज को बुलाने के लिए गया था। युवराज कक्ष में थे और मैं द्वार पर। युवराज को संदेश दे रहा था और अचानक मेरी नजर पर्यंक पर उभरे हुए भाग पर स्थित हो गयी। युवराज तो मंत्रणाकक्ष की ओर पधार गये। मैंने कक्ष में जाकर चद्दर हटाकर देखा तो यह सामान वहाँ छिपाया हुआ था।

अब तो सारी कहानी सामने थी। न प्रमाण की आवश्यकता थी और न साक्षी की।

(क्रमशः)

जहाज मंदिर मासिक पत्रिका सूचना

कोरोना के कारण अप्रेल से सितंबर तक जहाज मंदिर मासिक पत्रिका का मुद्रण नहीं हो सका। अतः जहाज मंदिर मासिक पत्रिका के सभी वार्षिक ग्राहकों का सदस्यता अवधि 6 महिने बढ़ा दी गई है।

सहयोग के लिए सभी पाठाकगणों का आभार।

आगामी विशेष दिवस

11 अक्टुबर रवि पुष्य नक्षत्र प्रारंभ प्रात: 06.38 से रात्रि 25.18 तक
16 अक्टुबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
23 अक्टुबर नवपद ओली प्रारंभ
30 अक्टुबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
31 अक्टुबर श्री नेमिनाथ च्यवन कल्याणक, नवपद ओली पूर्ण
3 नवंबर रोहिणी
7 नवंबर पुष्य नक्षत्र प्रारंभ प्रात: 08.04
8 नवंबर रवि पुष्य नक्षत्र प्रात: 06.55 से प्रात: 08.44 तक
12 नवंबर श्री नेमिनाथ च्यवन कल्याणक, आचार्य श्री जिनवल्लभसूरि जी म.सा. पुण्यतिथि, चित्तौड़गढ़
14 नवंबर पाक्षिक प्रतिक्रमण
15 नवंबर बिछुड़ो प्रारंभ दोपहर 11.57, भ. महावीर निर्वाण कल्याणक, दीपावली पर्व
16 नवंबर वीर संवत् 2547 प्रारंभ, निर्वाण लड्डू चढ़ाना, गौतम रास वांचन
19 नवंबर ज्ञान पंचमी, आचार्य श्री जिनउदयसागरसूरि पुण्यतिथि, सैलाना

पादरु दादावाडी में प्रति पूर्णिमा को पूजा होगी

श्री शीतलनाथ भगवान एवं श्री जिनकुशलसूरि दादावाड़ी ट्रस्ट द्वारा पादरू दादावाड़ी में हर पूनम को दादा गुरुदेव की बड़ी पूजा पढ़ाई जाएगी। साथ ही चारों दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि पर भी पूजा का आयोजन किया जायेगा।

इसके लिए अनेक गुरुभक्तों ने उल्लास से स्वयं के नाम लिखवायें। पूजा के लाभार्थियों की सूची इस प्रकार है–

प्रथम आसोज पूनम– शा. सांकलचन्दजी बादरमलजी संकलेचा रासोनी परिवार हैदराबाद।
द्वितीय आसोज पूनम– शा. भवरलालजी धर्मचन्दजी संकलेचा रासोनी परिवार हैदराबाद चेन्नई।
कार्तिक पूनम– शा. गौतमचंदजी हरकचन्दजी गुलेच्छा हैदराबाद।
मिगसर, पौष, माघ पूनम– शा. भिखचन्दजी सुमेरमलजी तातेड़ हैदराबाद हस्ते अशोकजी तातेड़।
फाल्गुन वदि अमावस– तृतीय दादा गुरु जयंती– पाबुदेवी गिरधारीलालजी संकलेचा।
फाल्गुन पूनम– शा. मूलचन्दजी हरकचन्दजी श्रीश्रीमाल मदुरै।
चैत्र पूनम– शा. बाबुलालजी गिरधारीलालजी संकलेचा।
वैशाख पूनम– ओखीदेवी मुलतानमलजी संकलेचा रासोनी हैदराबाद।
जेठ पूनम– शा. तिलोकचंदजी चंपालाल जी भंसाली चेन्नई।
आषाढ़ सुदि ग्यारस प्रथम दादा गुरु जयंती– शा. लूणकरणजी सांकलचन्दजी गोलेच्छा कोलकत्ता।
आषाढ, श्रावण पूनम– श्रीमती पूना देवी घेवरचंदजी संकलेचा हैदराबाद।
भादवा सुदि आठम दूजे दादा गुरु जन्म जयंती– संघवी शा. पूनमचन्दजी पुखराजजी छाजेड मुम्बई।
भाद्रवा पूनम– श्रीमती पूना देवी घेवरचंदजी संकलेचा हैदराबाद।
आसोज वदि बीज चौथे दादा गुरु की जयंती– संघवी श्रीमती पानीदेवी मुलतानमलजी छाजेड चेन्नई।

प्रेषक– गौतम संकलेचा चेन्नई

खरतरगच्छ साधु-साध्वी चातुर्मास सूची-2020

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रसारित

पू.गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.
पू. आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी म. आदि ठाणा ८
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर,
पो. मांडवला-343042 जिला-जालोर (राजस्थान)
मुकेश- 79871 51421, व्हाट्सप- 98251 05823
Email: jahajmandir99@gmail.com **01**

पू. आचार्य श्री जिनपूर्णानंदसागरसूरिजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ मंडल भद्रावती,
पो. भद्रावती-442902
(जि.चंद्रपुर-महाराष्ट्र) **02**

पू. आचार्य श्री जिनपीयूषसागरसूरिजी म. ठाणा ६
श्री जैन श्वेतांबर मंदिर,
शुक्रवारी चौक, नेहरू रोड,
पो. सिवनी - 480 661 (म.प्र.) **03**

पू. मुनि श्री मुक्तिप्रभसागरजी म.
मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी ठाणा ११
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (गुजरात)
फो.9427063069 **04**

पू. मुनि श्री ललितप्रभसागरजी म. ठाणा २
श्री चिंतामणि पार्श्वनाथ जैन श्वे. मंदिर
19 महावीर बाग, एरोड्रम रोड,
पो. इन्दौर-452002 (मध्यप्रदेश) **05**

पू. मुनि श्री चंद्रप्रभसागरजी म. ठाणा १
संबोधि धाम, कायलाना रोड
पो. जोधपुर-342004 (राजस्थान) **06**

पू. गणिवर श्री मणिरत्नसागरजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. पल्लीवाल मंदिर, दोना पत्तल गली,
मु.पो. गंगापुर सिटी, जिला-सवाई माधोपुर
(राजस्थान) पिन- 322201 **07**

पू. मुनि श्री महेन्द्रसागरजी मनीषसागरजी म. ठा.१०
श्री पार्श्वनाथ जैन मंदिर, श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक संघ,
इतवारी बाजार,
पो. धमतरी- 493773 (छ.ग.) **08**

पू. मुनि श्री ऋषभसागरजी म. ठाणा ३
श्री मुनिसुव्रतस्वामी जैन मंदिर, सराफा लाइन
पो. कवर्धा-491 995 (छ.ग.) **09**

पू. महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा ७
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270, (गुजरात)
फो. 9427063069 **10**

पू. प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. ठाणा ८
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर,
पो. मांडवला-343042
जिला-जालोर (राजस्थान) **11**

पू. गणिनी श्री सुलोचनाश्रीजी म. ठाणा १२
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270, (गुजरात)
फो. 9427063069 **12**

पू. गणिनी श्री सूर्यप्रभाश्रीजी म. ठाणा ११
जैन श्वे. मू. पू. संघ, स्टेशन एरिया,
पो. दोण्डाइचा-425408
जि.-नन्दुरबार (महाराष्ट्र) **13**

पू. साध्वी श्री चन्द्रकलाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री मणिप्रभाश्रीजी म. ठाणा १४
अरिहंत वाटिका, गलता गेट, मोहनवाड़ी
ट्रांसपोर्ट नगर के पास, दिल्ली जयपुर हाइवे,
पो. जयपुर-302003 (राजस्थान) **14**

पू. साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म. ठाणा ७
श्री जैन श्वे. जिनदत्तसूरि दादावाड़ी,
पाल बिचला, विनयनगर
पो. अजमेर-305001 (राजस्थान) **15**

पू. साध्वी श्री तरूणप्रभाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री जैन श्वेतांबर तीर्थ मंडल भद्रावती,
पो. भद्रावती-442902
(जि.चंद्रपुर-महाराष्ट्र) **16**

पू. साध्वी श्री सुरंजनाश्रीजी म. ठाणा १२
जैन धर्मशाला,
पो. गुडामालानी-344031
(जि.बाडमेर-राजस्थान) **17**

पू. साध्वी श्री पुष्पाश्रीजी म. ठाणा २
श्री विमलनाथ जैन श्वेताम्बर मन्दिर, उपाश्रय,
पो.-बागबाहरा-493449
जिला-महासमुन्द (छत्तीसगढ़) **18**

पू. साध्वी श्री राजेश श्रीजी म. ठाणा ६
कैवल्यधाम तीर्थ,
पो. कुम्हारी 491 001 जिला-दुर्ग (छ.ग.) **19**

पू. साध्वी श्री मनोरंजनाश्रीजी म. ठाणा ८
श्री जैन श्वे. संभवनाथ जिनालय
विवेकानंद नगर,
पो. रायपुर-492001 (छ.ग.) **20**

पू. साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ठाणा २
जैन मंदिर दादावाडी,
पो. महरौली-110030 (दिल्ली) **21**

पू. साध्वी श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म. ठाणा ३
बाबू माधवलाल धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270 (भावनगर-गुजरात) **22**

पू. साध्वी श्री भाग्ययशाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री जैन श्वे. दादावाड़ी टेम्पल ट्रस्ट
984/85, शुक्रवार पेठ, नेहरु मार्केट के सामने
पो. पूणे-411002 (महाराष्ट्र) **23**

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा १
जैन श्वे. मंदिर, पद्मावती नगर
अभिनंदन कॉलोनी के पास
पो. मंदसौर-458001 (मध्यप्रदेश) **24**

खरतरगच्छ साधु-साध्वी चातुर्मास सूची-2020

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रसारित

पू. साध्वी श्री विजयप्रभाश्रीजी म. ठाणा १०
श्री सिमंधरस्वामी जैन मंदिर दादावाडी,
भैरव सोसायटी
पो. रायपुर- 492001 (छ.ग.)
25

पू. माताजी म. साध्वी श्री रतनमालाश्रीजी म.
पू. बहिन म. डॉ. श्री विद्युत्प्रभाश्रीजी म. ठाणा ५
श्री जिनकुशल सूरि जैन दादावाडी ट्रस्ट
89/90, गोविन्दप्पा रोड़, बसवनगुडी
पो. बैंगलुरु-560004 (कर्णाटक)
26

पू. साध्वी श्री प्रियंकराश्रीजी म. ठाणा ३
श्री सुमतिनाथ जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट,
सदर बाजार,
पो. मुंगेली-495335 (छ.ग.)
27

पू. साध्वी श्री मंजुलाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री शान्तिनाथ श्वे. मंदिर,
404, टी.एच. रोड, पुराना धोबी पेठ,
पो. चैन्नई-600021 (तमिलनाडु)
28

पू. साध्वी श्री जिनशिशुप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा ७
श्री शांतिनाथ मंदिर, सराफा बाजार,
पो. जबलपुर- 482020 (मध्यप्रदेश)
29

पू. साध्वी श्री सम्यग्दर्शनाश्रीजी म. ठाणा ६
श्री जिन कुशलसूरि जैन दादावाड़ी, एम.जी. रोड़,
पो. रायपुर-492001 (छ.ग.)
30

पू. साध्वी श्री विमलयशाश्रीजी ठाणा २
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी,
28, रामबाग, गणेश कॉलोनी,
पो. इन्दौर-452004 (म.प्र.)
31

पू. साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. ठाणा ७
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर,
पो. मांडवला-343042
जिला-जालोर (राजस्थान)
32

पू. साध्वी श्री लक्ष्यपूर्णाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री अहमदाबाद खरतरगच्छ ट्रस्ट, दादा साहेब नां पगला,
दादा जिनदत्तसूरि मार्ग, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद- 380009 (गुजरात)
33

पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. ठाणा १४
श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट, जहाज मंदिर,
पो. मांडवला-343042 जिला-जालोर (राजस्थान)
34

पू. साध्वी डॉ. श्री शासनप्रभाश्रीजी म. ठाणा २
श्री पार्श्व पद्मावती सेवा ट्रस्ट,
सदनपल्ली विलेज, सुंदमपट्टी,
पो. ओरप्पम कृष्णगिरि-635108 (त.ना.)
35

पू. साध्वी श्री लयस्मिताश्रीजी ठाणा ५
श्री जैन श्वे. मंदिर ट्रस्ट,
पो. जगदलपुर-494001 (जि. बस्तर) छ.ग.
36

पू. साध्वी श्री मृगावतीश्रीजी म. ठाणा ३
श्री अहमदाबाद खरतरगच्छ ट्रस्ट, दादा साहेब नां पगला,
दादा जिनदत्तसूरि मार्ग, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद- 380009 (गुजरात)
37

पू. साध्वी श्री हेमप्रज्ञाश्रीजी म. ठाणा ५
श्री जैन श्वे. श्रीमाल सभा, जैन दादाबाडी
मोतीडूंगरी रोड,
पो. जयपुर-302004 (राजस्थान)
38

पू. साध्वी श्री शुभदर्शनाश्रीजी म. ठाणा ३
कुशल भवन, सब्जी मंडी,
पो. केकडी- 305404 (जि. अजमेर-राजस्थान)
39

पू. साध्वी श्री प्रभंजनाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जैन श्वे. मंदिर, 37 मारवाडी रोड
पो. भोपाल-462001 (म.प्र.)
40

पू. साध्वी श्री प्रियंवदाश्रीजी म.
पू. साध्वी श्री शुद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा ६
श्री जिनकुशलसूरि जिनचंद्रसूरि दादावाड़ी
370, कुन्नूर हाई रोड, अयनावरम,
पो. चेन्नई 600012 (तमिलनाडु)
41

पू. साध्वी श्री सौम्यगुणाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री जिनकान्तिसागरसूरि आराधना भवन, हमीरपुरा
पो. बाडमेर-344001 (राजस्थान)
42

पू. साध्वी श्री गुणरंजनाश्रीजी म. ठाणा १
जैन श्वे. मंदिर,
पो. भीलवाड़ा-311001 (राजस्थान)
43

पू. साध्वी श्री हर्षपूर्णाश्रीजी म. ठाणा ५
श्री जैन संघ, जैन भवन,
गंतालम सतु स्ट्रीट, स्वाति टिफिन के सामने
पो. गुंटुर-522003 (आंध्रप्रदेश)
44

पू. साध्वी श्री प्रगुणाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री श्वे. जैन संघ, श्री महावीर भवन,
नेताजी सुभाष मार्ग,
पो. सतना-485001 (म.प्र.)
45

पू. साध्वी श्री प्रियस्मिताश्रीजी म. ठाणा ६
श्री जैन श्वे. सोसायटी
पो. शिखरजी-826329
जिला-गिरडीह (झारखण्ड)
46

पू. साध्वी श्री प्रियकल्पनाश्रीजी म. ठाणा ८
श्री कुशल कान्ति खरतरगच्छ जैन संघ,
ए-102, वेस्टर्न शिखरजी, मधुवन सर्कल,
ग्रीन सिटी रोड़, पाल, पो. सूरत-395009 (गुजरात)
47

पू. साध्वी श्री प्रियरंजनाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ कुशल भवन, शांति नगर,
पो. सांचोर-343041(जालोर-राज.)
48

खरतरगच्छ साधु-साध्वी चातुर्मास सूची-2020

पूज्य गणनायक श्री सुखसागरजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रसारित

पू. साध्वी श्री स्नेहयशाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री धर्मचक्र प्रभावक तीर्थ, नाशिक-मुंबई हाईवे,
पो. विल्होली-422010, जिला-नाशिक (महा.)
49

पू. साध्वी श्री अमितगुणाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270,
(गुजरात)
50

पू. साध्वी श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड़,
पो. पालीताना-364270, (गुजरात)
51

पू. साध्वी श्री संघमित्राश्रीजी म. ठाणा ३
जैन श्वेताम्बर मंदिर, जैन धर्मशाला, जाटावास,
पो. लोहावट-342302 जिला जोधपुर (राजस्थान)
52

पू. साध्वी डॉ. श्री नीलांजनाश्रीजी म. ठाणा ३
जैन आराधना भवन, 76, ए चेटी स्ट्रीट,
पो. तिरूपातूर-635601 जि.-वेल्लुर (तमिलनाडु)
53

पू. साध्वी श्री शीलांजनाश्रीजी म. ठाणा ४
श्री जैन श्वे. श्री संघ उपाश्रय,
उमेदपुरा, मीठोडा वास
पो. सिवाना-344044 (जि.-बाड़मेर राजस्थान)
54

पू. साध्वी श्री संयमज्योतिश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जैन श्वे. मू. पू. श्रीसंघ पौषधशाला, सदर बाजार
पो. जैतारण-306302 जि. पाली (राजस्थान)
55

पू. साध्वी श्री प्रियसौम्यांजनाश्रीजी म. ठाणा ३
श्री अहमदाबाद खरतरगच्छ ट्रस्ट, दादा साहेब नां पगला,
दादा जिनदत्तसूरि मार्ग, नवरंगपुरा
पो. अहमदाबाद- 380009 (गुजरात)
56

पू. साध्वी श्री आत्मदर्शनाश्रीजी म. ठाणा ५
श्री जैन श्वे. संस्था, सोडाला
आई-1, वशिष्ट मार्ग, श्याम नगर,
पो. जयपुर- 302019 (राजस्थान)
57

पू. साध्वी श्री अभ्युदयाश्रीजी म. ठाणा ३
जैन श्वे. कीकाभाई प्रेमचंद ट्रस्ट, गजमंदिर,
पो. रिषभदेव-313802 जिला उदयपुर (राज.)
58

पू. साध्वी श्री अमीपूर्णाश्रीजी म. ठाणा १
श्री शांतिनाथ जी जैन श्वे. मंदिर
श्री शांतिनाथ जी की गली, छोटा सर्राफा
पो. उज्जैन-456006 (म.प्र.)
59

पू. साध्वी श्री मोक्षरत्नाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ शीतलवाडी उपाश्रय,
गोपीपुरा, सुभाष चौक, ओसवाल मोहल्ला,
पो. सूरत-391440 (गुजरात)
60

पू. साध्वी श्री श्रद्धान्विताश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी, बिल्डींग 25 ए,
पहला माला, अशोकनगर
पो. भिवण्डी-421302 जिला-ठाणे (महाराष्ट्र)
61

पू. साध्वी श्री वैराग्यनिधिश्रीजी म. ठाणा ३
श्री जैन श्वे. मूर्तिपूजक समिति, 58/39 बिरहाना रोड,
बेंक ऑफ बरोडा के पीछे, खत्री धर्मशाला के पास,
पो. कानपुर- 208001 (उत्तरप्रदेश)
62

पू. साध्वी श्री श्रद्धानिधिश्रीजी म. ठाणा १
श्री सुगनजी महाराज का उपासरा, रांगडी चौक,
पो. बीकानेर-334001 (राजस्थान)
63

पू. साध्वी श्री समदर्शिताश्रीजी म. ठाणा २
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड,
पो. पालीताणा-364270 जि. भावनगर (गुजरात)
63

पू. साध्वी श्री दर्शनप्रभाश्रीजी म. ठाणा ३
झाबक भवन, नवपद सोसायटी के पास,
आजवा रोड़,
पो. बड़ोदा-396006 (गुजरात)
64

पू. साध्वी श्री आज्ञांजनाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जिनहरि विहार धर्मशाला, तलेटी रोड,
पो. पालीताणा-364270 जि. भावनगर (गुजरात)
65

पू. साध्वी श्री विरलप्रभाश्रीजी म. ठाणा २
श्री जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, पिपली बाजार,
पो. जावरा-457226 जिला- रतलाम (म.प्र.)
66

स्वर्गवास	स्थान
१. महत्तरा श्री विनीताश्रीजी म.	इन्दौर
२. साध्वी सुलोचनाश्रीजी म.	जयपुर
३. साध्वी संयमपूर्णाश्रीजी म.	बिकानेर
४. साध्वी हर्षयशाश्रीजी म.	अंकलेश्वर

नूतन दीक्षाएं 5 (एक मुनि और चार साध्वी)

नाम	दीक्षा स्थल
१. मुनि शासनरत्नसागरजी म.	कैवल्यधाम
२. साध्वी पर्वप्रभाश्रीजी म.	बालोतरा
३. साध्वी सहजप्रज्ञाश्रीजी म.	बाडमेर
४. साध्वी ऋजुप्रज्ञाश्रीजी म.	चौहटन
५. साध्वी नम्रप्रज्ञाश्रीजी म.	चौहटन

खरतरगच्छ साधु-साध्वी चातुर्मास सूची-2020

पूज्य गणनायक श्री मोहनलालजी म. का समुदाय

आज्ञा प्रदाता- पूज्य गणाधीश पं. विनयकुशलमुनिजी म.सा.

अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा द्वारा प्रसारित

पू. गणाधीश पं. श्री विनयकुशलमुनिजी म. ठा. २
श्री आनंद भवन, त्रिपोलिया गेट, धान मंडी,
पो. रतलाम-457001 (म.प्र.)
1

पू. विनयमुनिजी म. ठाणा ३
सादडी भवन की गली में, आइडिया टॉवर के पास
पो. पालीताना-364270 (गुजरात)
2

पू. विरागमुनिजी म. ठाणा २
जैन श्वे. खरतरगच्छ संघ, श्री वर्धमान पार्श्वनाथ मंदिर
कांति नगर, धन्वंतरी अस्पताल के पास, पाल रोड
पो. जोधपुर-342001 (राजस्थान)
3

पू. साध्वी श्री कुशल श्रीजी म. ठाणा ३
अनुभव स्मारक संस्थान, सर्किट हाउस के पास
पो. पाली मारवाड-306401 (राजस्थान)
4

मुनि भगवंत	= ५२	मुनि भगवंत के चातुर्मास	= १२
साध्वी भगवंत	= २७३	साध्वी भगवंत के चातुर्मास	= ५९
कुल योग	= ३२५	कुल चातुर्मास	= ७१

.....संघ-संस्थाएँ .....

- अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ प्रतिनिधि महासभा
- अखिल भारतीय श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी
- अखिल भारतीय श्री जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ महासंघ
- अ.भा. खरतरगच्छ युवा परिषद
- अ.भा. खरतरगच्छ महिला परिषद

आदि

.....पत्र-पत्रिकाएँ.....

- जहाज मंदिर (मासिक)
- प्रतिवर्ष पंचांग प्रकाशन
- ज्योति संदेश वार्ता
- खरतर वाणी

जहाज मंदिर में पर्वाधिराज पर्युषण आराधना संपन्न

मांडवला 22 अगस्त। पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य भगवंत श्री जिनकान्तिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की समाधि भूमि जहाज मंदिर में पूज्य आचार्यश्री के शिष्य पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्यश्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा 8 एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 8, पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा 14, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा 7 कुल 37 साधु-साध्वियों की पावन सानिध्यता में पर्वाधिराज पर्युषण महापर्व की आराधना अत्यन्त आनंद मंगल व उल्लास के साथ संपन्न हुई।

कोरोना संक्रमण के वातावरण में बाहर से श्रद्धालुओं के आने पर रोक लगी हुई थी। मुमुक्षु, तपस्वी परिवार एवं ट्रस्टीगणों की ही उपस्थिति थी।

पूज्य आचार्यश्री के प्रवचनों का संस्कार टीवी, यूट्यूब एवं फेसबुक पर लाइव प्रसारण किया गया। लाखों लोगों ने श्रवण का लाभ प्राप्त किया। 14 सुपन, पारणा आदि के आदेश नकरों से प्रदान किये गये।

भाद्रपद वदि 14 को मणिधारी दादा गुरुदेव की पुण्यतिथि मनाई गई। भाद्रपद वदि 30 को द्रव्यानुयोगी श्रीमद् देवचन्द्रजी म. की पुण्यतिथि मनाई गई।

पर्युषण में आठों दिन पूजाऐं पढाई गई। तथा शाम को भक्ति भावना का आयोजन किया गया।

जहाज मंदिर मांडवला

की धन्य धरा पर

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में

श्रुत साधना वर्षावास

पावन निश्रा

पू. गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री **जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी** म.सा.

पू. ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री **जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी** म.सा.

आदि ठाणा 8

पावन सानिध्य

पूज्या प्रवर्तिनी श्री **शशिप्रभाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा 8

पूज्या साध्वीवर्या श्री **विमलप्रभाश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा 14

पूज्या साध्वीवर्या श्री **कल्पलताश्रीजी** म.सा. आदि ठाणा 7

चातुर्मास के लाभार्थी परिवारों की अनुमोदना

मुख्य सहयोगी

संघवी श्रीमती मोहिनीदेवी समरथमलजी रांका उम्मेदाबाद के दिव्य आशीष से

स्व. श्रीमान् कान्तीलालजी-श्रीमती विमलादेवी,

श्रीमान भागचंदजी-श्रीमती पुष्पादेवी,

श्रीमान उत्तमचंदजी-श्रीमती शांतीदेवी,

भरतकुमारजी-डीम्पलदेवी, भुपेशकुमारजी-भगवतीदेवी,

प्रकाशकुमारजी-प्रियंकादेवी, संदीपकुमारजी-राजश्रीदेवी,

चेतनकुमारजी-वर्षादेवी, विनीत, वंश, जक्ष, दिती, सक्षम, शाश्वत, तनुष्का रांका

बेटा पोता पड़पोता शा. समरथमलजी सोनाजी रांका परिवार

उम्मेदाबाद (गोल) चैन्नई-बैंगलोर

मुख्य सह सहयोगी

संघवी श्रीमती पानीदेवी मोहनलालजी मुथा के दिव्य आशिष से
शा. हंसराजजी-कमलादेवी , रमेशकुमारजी-भाग्यवन्तीदेवी, सुरेशकुमारजी-मधुदेवी,
प्रफुलकुमारजी-संगीता, धीरजकुमारजी-कल्पना, कुणालकुमारजी-प्रितीदेवी,
प्रतिककुमारजी-सलोनी, राहुल कुमार, यश, दर्श, प्रवीण, हियान सोनवाडीया मुथा परिवार,
बेटा पोता रुघनाथमलजी (कामदार शा) परिवार माण्डवला (चैन्नई)

संघवी श्रीमती ललीता देवी पुखराजजी शाह के आशीर्वाद से
राजेश शाह-नन्दा देवी, प्रवीण शाह-कविता देवी, रमील शाह-पायलदेवी,
श्रेयांश, मनन, माहिर, जीया, जयेना, हिदान पालरेचा परिवार
(संघवी पी.आर. शाह, मोकलसर, बैंगलुरु)

संघवी श्रीमती शान्तिदेवी पुखराजजी
तेजराजजी गुलेच्छा परिवार,
मोकलसर (बैंगलुरू)

स्व. श्रीमती बदामीदेवी की स्मृति में
शा. सांकलचंदजी, महेन्द्र, निलम, ध्रुव, तनुशा, एवं
समस्त पटवारी परिवार, कम्पनी मिपल ग्लोबल,
माण्डवला, बैंगलुरू, मैसुर

हीरक स्तम्भ

श्रीमती कुसुम देवी शिखरचन्दजी आदर्श, सिद्धार्थ, चोरडिया परिवार, अजिमगंज

गुरु भक्त परिवार कोलकाता

कोलकाता महिला मण्डल भवानीपुर

श्री रिखबराजजी रतनदेवी भंसाली, संजयजी, अनिलजी,
पुत्र-पौत्र श्री सम्पतराजजी भंसाली परिवार, जोधपुर (U.S.A.)

रत्न स्तम्भ

- शा. किशोरकुमारजी अशोककुमारजी पवनकुमारजी मदनलालजी सुपुत्र श्री नेमीचन्दजी लुंकड परिवार, (बी.एन.ग्रुप) बालोतरा
- श्रीमती प्रभादेवी मीठालालजी की प्रेरणा से अरविन्दकुमारजी आनन्दकुमारजी श्रेणिककुमारजी विनायकिया परिवार, खांडप मुंबई
- श्री द्वारकादासजी पीयूषजी अनिलजी भरतजी महावीरजी बेटा पोता श्री भगवानदासजी डोसी परिवार, चौहटन
- तीर्थरत्न श्रीमती सुखीदेवी केवलचंदजी नरेशकुमारजी कमलेशकुमारजी विमलकुमारजी संखलेचा परिवार रामा-कल्याण
- शा. जगदीशकुमारजी अशोककुमारजी अमित बेटा पोता श्री सांकलचंदजी बादरमलजी संकलेचा(रासोणी) परिवार, पादरू-हैदरबाद
- शा. प्रवीणकुमारजी रिंकुकुमारजी प्रितेश, प्रशांक, धुविल संकलेचा परिवार, पादरु-हैदराबाद
- श्रीमती कमलादेवी सुरेन्द्रमलजी, श्रीमती विनीता धर्मेन्द्रजी, ऋषभ, माही पटवा परिवार, जालोर
- श्रीमती मातुश्री पवनीदेवी पूनमचन्दजी, श्रीमती कांतादेवी मांगीलालजी भंडारी परिवार, मांडवला हालोल
- शा. मांगीलालजी मुलचन्दजी रोहित, दीपक बेटा पोता चिंतामणदासजी संकलेचा परिवार, बाडमेर
- शा. नेमीचन्दजी सुराणा के दिव्य आशीष से विजयकुमारजी, संजयकुमारजी, अशोकजी, सौरभजी सुराणा परिवार रायपुर
- संघवी किरणराजजी, दिनेशकुमारजी, प्रवीणकुमारजी सुपुत्र संघवी मोहनलालजी, बस्तीमलजी दांतेवाडीया परिवार, माण्डवला चैन्नई
- संघवी मुथा शा. दीपचन्दजी कैलाशकुमारजी गौतमचन्दजी बेटा पोता रघुनाथमलजी सोनवाडिया (सीतादीप) परिवार माण्डवला दिल्ली
- संघवी शा. जीतमलजी कुन्दनमलजी दांतेवाडीया परिवार, माण्डवला बेंगलूरु
- संघवी अशोककुमारजी विनोदकुमारजी महावीरकुमारजी बेटा पोता मानमलजी मिश्रीमलजी गुलेच्छा परिवार, जिवाणा चैन्नई
- संघवी श्रीमती सुखीदेवी पारसमलजी मुथा, मदनलालजी प्रवीण कुमारजी राकेशकुमारजी सोनवाडीया परिवार मांडवला चैन्नई बेंगलूरु

- 卐 श्रीमती पुष्पाजी श्री अशोककुमारजी, केतन -बिन्दुजी, चेतन - संगीतादेवी बरलोटा परिवार, पाली-मुंबई
- 卐 शा. रामरतनजी प्रकाशकुमारजी अजयकुमारजी विजयकुमारजी बेटा पोता नारायणदासजी छाजेड़ परिवार, केशवना डोंबिवली
- 卐 संघवी श्री अशोककुमारजी मानमलजी पुत्र अनिकेतकुमारजी अभिनयकुमारजी भंसाली परिवार, गढ़ सिवाना अहमदाबाद
- 卐 कलावती फाईनेंस लि. अहमदाबाद कोयंबतुर
- 卐 शा. बाबुलालजी भैरुचन्दजी नरपतलालजी बेटा पोता शा. भूरचन्दजी लक्ष्मणदासजी लूणिया परिवार, धोरीमना-अहमदाबाद
- 卐 शा. पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी अनिकेत सिद्धार्थ टाटिया परिवार, तिंवरी (वडपलनी-चैनई)
- 卐 श्री हिन्दुमलजी - मटकादेवी, पुत्र पुखराजजी सुरेशकुमारजी भरतकुमारजी नरेशकुमारजी बेटा पोता हमीरमलजी लूणिया परिवार, धोरीमन्ना, चैन्नई, मुंबई, जोधपुर
- 卐 शा. भंवरलालजी - श्रीमती सुआदेवी, पुत्र ओमप्रकाशजी, अशोककुमारजी बेटा पोता श्री विरधीचन्दजी छाजेड परिवार, बाडमेर (नवी मुंबई)
- 卐 श्रीमती धाईदेवी शंकरलालजी की प्रेरणा से पुरुषोत्तमजी, मनोजजी, शुभम, ऋषभ, सेठिया परिवार (ऋषभ ग्रुप-बालोतरा) बाड़मेर
- 卐 शा. सम्पतराजजी लूणीदेवी, पुरुषोतमदासजी उषादेवी, गौरव प्रिंयका धारीवाल परिवार, सनावड़ा (सूरत)
- 卐 श्रीमती धाईदेवी मेवारामजी के आशीर्वाद से छगनलालजी घेवरचन्दजी सुरेशकुमारजी घीया परिवार, भिंयाड-सूरत
- 卐 श्रीमती गोदावरी देवी व्यापारीलालजी की स्मृति में विनोदकुमारजी गौतमचंदजी पारसमलजी सुरेशकुमारजी बोहरा (हालावाले) सूरत
- 卐 श्रीमती धर्मीदेवी रुगामलजी घीया की स्मृति में चम्पालालजी हितेषकुमारजी विधान कुमारजी घीया परिवार, भिंयाड-सूरत
- 卐 शा. रतनलालजी संजयकुमारजी महावीरकुमारजी मोहीतकुमारजी काव्य संखलेचा परिवार, बाड़मेर
- 卐 श्रीमती मेवीदेवी भवरलालजी के दिव्य आशीष से शा. पारसमलजी लूणकरणजी प्रकाशचन्दजी अशोककुमारजी बोहरा परिवार बाडमेर जयपुर
- 卐 श्रद्धेय श्री केशरीमलजी की स्मृति में श्रीमती ढेलीदेवी जगदीशचन्दजी विनोदजी दिनेशजी बोथरा परिवार, बाडमेर तिरुपुर
- 卐 स्व. श्रीमती मांगीदेवी श्री राणामलजी, सुपुत्र बाबुलालजी भूरचन्दजी सम्पतराजजी मांगीलाल, सवाई, अंकित मेहता परिवार, बाडमेर
- 卐 मातुश्री ढेलीदेवी रिखबदासजी, श्रीमती उषादेवी मांगीलालजी परमेश्वरीदेवी रतनलालजी वडेरा (ठेकेदार) परिवार, बाड़मेर
- 卐 शा. बाबुलालजी - निर्मलादेवी, जितेन्द्र कुमार पिंकीदेवी, मनोजजी तनुजादेवी, टी बोथरा परिवार बिशाला वाले (बाड़मेर)

卐 शा. भीखमचन्दजी पुनमचन्दजी श्रीपालजी अरिहंत नाहटा परिवार, बीकानेर
卐 गुरु भक्त परिवार, तिरुपातुर
卐 संघवी शा. वंशराजजी कुशलराजजी संतोषकुमारजी भंसाली परिवार, गढ सिवाना (अहमदाबाद)
卐 श्रीमान प्रकाशचन्दजी अंशुकुमारजी लोढा परिवार, जयपुर
卐 श्रीमती रेशमीदेवी की स्मृति में संतोकचन्दजी माणकचन्दजी कान्तीलालजी मोतीलालजी, महावीर चौपड़ा परिवार, बालोतरा अहमदाबाद
卐 संघवी शा. कुशलराजजी, उत्तमचन्दजी सुपुत्र श्रीमती रुक्मणीदेवी पृथ्वीराजजी गुलेच्छा परिवार, मोकलसर-बैंगलुरू
卐 संघवी शा. भीकचंदजी धनराजजी बेटा पोता नरसिंगमलजी टोमचंदजी देसाई परिवार सिणधरी, मल्हारपेट, सूरत
卐 श्री खीमराजजी सम्पतराजजी पुरुषोतमदासजी, मनोजकुमार निशांत प्रतीश बोथरा परिवार बाड़मेर दिल्ली
卐 श्रीमती धाईदेवी शंकरलालजी शा. अशोक कुमार चन्द्रप्रकाशजी अनिलकुमारजी धारीवाल परिवार, चौहटन
卐 श्रीमती विमलादेवी ओटमलजी रमेशकुमारजी राकेशकुमारजी वेलचंदजी पटवारी परिवार मांडवला-विजयवाडा
卐 श्रीमती खम्मादेवी वनेचंदजी के आशीर्वाद से श्री लालचंदजी, सुखराजजी, भंवरलालजी, पारसमलजी, गौतमचंदजी, मंडोवरा परिवार, सिणधरी (सूरत)
卐 श्रीमती चंचलदेवी गोविंदचंदजी मेहता के दिव्य आशीष से राजेशजी राकेशजी रजत मेहता परिवार खिमेल जोधपुर मुंबई
卐 श्रीमती गोदावरी देवी व्यापारीलालजी पुत्र रतनलालजी - अंजुदेवी, पुत्र हितेश कुमार मौनादेवी बोहरा, हालावाले बाडमेर अहमदाबाद
卐 शा. रतनचन्दजी प्रकाशचन्दजी सचिनजी जिनेशजी समृद्ध, चोपडा परिवार बिलाडा-हैदराबाद
卐 शा. भंवरलालजी सोहनलालजी मांगीलालजी बेटा पोता स्व. सरेमलजी मिश्रीमलजी बोकडिया परिवार जसोल मुंबई
卐 श्री गौतमचंदजी अभयकुमारजी बोकडिया, चैन्नई
卐 शा. नेमीचन्दजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी बाडमेर इचलकरंजी
卐 शा. कालुचन्दजी कसाजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार, सांचोर-मुंबई
卐 सौ. प्रेमलतादेवी की स्मृति में संघवी शा. विजयराजजी चंपालालजी डोसी पुत्र हंसराजजी कुशलजी पौत्र भाविक डोसी परिवार खजवाना-बेंगलुरू
卐 संघवी शा. मोहनलालजी लालचन्दजी शान्तीलालजी घेवरचन्दजी राजमलजी मरडिया परिवार, चितलवाना-सूरत
卐 शा. बाबुलालजी कान्तीलालजी महेन्द्रकुमारजी बेटा पोता शा. गिरधारीलालजी सेराजी पालरेचा परिवार मोकलसर-होसपेट

卐 एक भाग्यशाली परिवार बीकानेर
卐 श्री विश्वासजी सौ. रेणुदेवी गोठी जैन, जयपुर
卐 शा. स्वरुपचंदजी सुरेन्द्रजी सैंथिया
卐 श्री जितेन्द्र मनीष कपिल बेटा-पोता शा. मांगीलालजी आसूलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत

स्वर्ण स्तम्भ

* शा. सुरजमलजी विकासकुमारजी संदीप देवड़ा धोका परिवार, खाण्डप- हैदराबाद
* श्रीमती सुरजदेवी सज्जनराजजी कोठारी परिवार मुम्बई (हुबली)
* शा. नेमीचंदजी राजेशकुमारजी रसीतकुमारजी कटारिया परिवार पादरु-चैन्नई
* श्रीमती भिखीदेवी केशरीमलजी संकलेचा (रासोनी) परिवार, गढ़ सिवाणा- हैदराबाद
* श्रीमती कन्याबाई रायचन्दजी संकलेचा परिवार, रामा-कल्याण
* श्रीमती सुखीदेवी रायचन्दजी छाजेड (निम्बलाना वाले) गढ़ सिवाना-हैदराबाद
* शा. सुरेशकुमारजी जितेन्द्रकुमारजी बेटा पोता पारसमलजी चौपडा परिवार बालोतरा
* संघवी श्रीमती वरजूदेवी पुखराजजी प्रतापजी परिवार, माण्डवला-गुंटुर
* शा. अंकितकुमारजी पारसमलजी छाजेड, माण्डवला - मुंबई
* श्री जिनकुशलसूरि दादावाडी खरतरगच्छ संघ, गढ़ सिवाना
* शा. जुगराजजी पवनकुमारजी अभिषेककुमारजी गुलेच्छा, माण्डवला-चैन्नई
* शा. पारसमलजी चम्पालालजी रतनलालजी बरडिया परिवार, बाड़मेर
* शा. बाबुलालजी योगेशकुमारजी बरडिया दुर्ग (छत्तीसगढ)
* शा. शंकरलालजी रतनचन्दजी गौतमचन्दजी बोथरा परिवार, बाडमेर
* श्रीमती विमलादेवी मांगीलालजी नेमीचन्दजी रांका परिवार उम्मेदाबाद (चैन्नई)
* संघवी शा. अर्जुनराजजी लक्ष्मीराजजी हेमंतराजजी गौतमराजजी बच्छावत मेहता परिवार, नागोर-चैन्नई
* शा. अतुलकुमारजी हर्षितकुमारजी सुपुत्र श्री शरदचन्दजी कांकरिया परिवार, ब्यावर
* शा. ताराचन्दजी दीपचन्दजी सौभागमलजी पारसमलजी कोठारी परिवार, ब्यावर
* श्रीमान उदयराजजी भंवरलालजी महेशचन्दजी गांधी परिवार धोरीमन्ना-जोधपुर
* श्रीमती आशादेवी नेमीचन्दजी खजांची परिवार, बीकानेर-सुरत
* श्रीमती लादीबाई स्व. सेठ शंभुमलजी कंवरलालजी बलवंतजी सेठ रांका परिवार, ब्यावर
* शा. केशरीमलजी शिवलालचंदजी छाजेड़ परिवार, बाड़मेर
* दिव्य आशिष शा. सरेमलजी श्रीमती सुखीदेवी रुपचन्दजी तातेड परिवार (पादरु -सैलम)
* संघवी माणकचन्दजी अरुणजी विनयजी ललवानी परिवार, गढ सिवाना, इचलकरणजी, अहमदाबाद
* श्रीमती मंजुदेवी जगदीशजी भंसाली परिवार, पाली (बाड़मेर)
* शा. गजेन्द्रकुमारजी रिखबदासजी तगामलजी संकलेचा परिवार, बालोतरा
* श्रीमती चम्पादेवी गणेशमलजी के आशीर्वाद से मिठालालजी भंसाली परिवार, उम्मेदाबाद- बैंगलुरु
* संघवी शा. पुखराजजी अमृतलालजी मोहनलालजी कटारिया परिवार, बालोतरा मुंबई
* संघवी श्रीमती लेहरीदेवी लाधमलजी मावाजी मरडिया परिवार, चितलवाना-मुंबई
* शा. सुरेशकुमारजी दिलीपकुमारजी शैलेषकुमारजी बेटा पोता कपूरचन्दजी पालरेचा मोकलसर-बैंगलुरु
* श्री जैन श्वेताम्बर मू.पू. संघ धमतरी (छतीसगढ़)
* श्रीमती शान्तीदेवी जीवराजजी श्रीश्रीश्रीमाल परिवार सांचोर-मुंबई
* एक सद्गृहस्थ जैन बन्धु, केशवना

* श्रीमती अमरावदेवी भंवरलालजी वंशराजजी देसाई परिवार, सिणधरी-सूरत
* श्रीमती तारादेवी नेमीचन्दजी देसाई परिवार, सिणधरी-सूरत
* संघवी शा. जांवतराजजी चम्पालालजी रमेशकुमारजी मरडिया परिवार, सांचोर- सूरत
* श्री जैन श्वे. मू.पू. खरतरगच्छ संघ, बालोतरा
* श्रीमती फुलीदेवी मिश्रीमलजी भंसाली परिवार, गढ़ सिवाना (बैंगलुरु)
* शा. शान्तिलाल निरजकुमार छाजेड़ बाडमेर (मालेगांव)
* श्री रोहितकुमार की स्मृति में शा. मांगीलालजी सौ. सुमित्रादेवी मालू, बाडमेर- मालेगांव
* श्री गौतमकुमारजी सौ. कमलाबाई, राहुल, अतुल भंसाली परिवार, जोधपुर बेंगलूरु अबुधाबी
* जैन श्वे. श्री संघ, केशवणा
* शा. भभूतमलजी कमलेशकुमारजी महावीरजी छाजेड, केशवणा
* शा. भंवरलालजी आनंदजी सुभाषजी हुंडिया, मोकलसर-जोधपुर

रजत स्तम्भ

* श्रीमती किरणदेवी सतीश कुमारजी जीरावला, गढ़-सिवाना (बैंगलुरु)
* शा. कैलाशकुमारजी भंवरलालजी संकलेचा (रासोणी) परिवार, पादरु-चैन्नई-हैदराबाद
* शा. रमेश कुमारजी, नीतिनकुमारजी सेठीया परिवार, चौहटन
* श्री एस. कम्प्यूटर सेन्टर, धर्मेन्द्रजी गौरांगजी बोहरा, जोधपुर
* शा. जवरीलालजी गणेशमलजी बाफना मोकलसर-मुम्बई

कांस्य स्तम्भ

* शा. महेन्द्रकुमारजी वंशराजजी पालरेचा, मोकलसर
* शा. मांगीलालजी बालचन्दजी मालू, कगाऊ-माण्डवला
* शा. मणिलालजी दुसाज, कोलकाता

चातुर्मास के लाभार्थी परिवारों की अनुमोदना

चितलवाना में प्रतिष्ठा

चितलवाना 11 मार्च। सांचोर के निकटवर्ती चितलवाना गांव में श्री शांतिनाथ जिनमंदिर की प्रतिष्ठा चौत्र वदि 2 ता. 11 मार्च 2020 को पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. एवं पूज्य मरुधर रत्न तपागच्छाचार्य श्री रत्नाकरसूरीश्वरजी म.सा. आदि ठाणा की पावन निश्रा में अत्यन्त आनंद व हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

महोत्सव का प्रारंभ ता. 8 मार्च 2020 को कुंभ स्थापना, दीप स्थापना आदि विधि-विधानों एवं पूज्य आचार्यद्वय के मंगल नगर प्रवेश से हुआ।

ता. 9 मार्च को नंद्यावर्त पूजन आदि विशिष्ट पूजाओं का विधान हुआ। ता. 10 मार्च को वरघोडा आयोजित किया गया। ता. 11 मार्च को मंगल मुहूर्त्त में परमात्मा शांतिनाथ, महावीर स्वामी, श्रेयांसनाथ को गादीनशीन किया गया। शिखर पर ध्वजा चढाई गई एवं स्वर्ण कलश बिराजमान किया गया। रंगमंडप एवं श्रृंगारचौकी पर कलश स्थापना की गई। रंगमंडप में गौतमस्वामी एवं सुधर्मास्वामी की प्रतिमाजी बिराजमान की गई। प्रतिष्ठा के बाद मंगल पाठ सुनाया गया। एवं पूज्य गुरुभगवंतों को कामली ओढाई गई। ता. 12 मार्च को द्वारोद्घाटन किया गया।

दीपावली पूजन विधि

श्री जैन शारदा-महालक्ष्मी पूजन दीपावली पूजन-विधि

1. स्नान करके शुद्ध वस्त्र पहन कर पूजा करें।
2. पूजन के उपकरण-धूप बत्ती, धूपदान, अखण्ड दीपक, पान, मौली, पंचामृत-दही, दूध, घी, मिश्री और केसर मिलाकर कलश तैयार कर लें। अक्षत, सुपारी और केसर आदि सभी एक थाली में संचय करके रख लें।
3. दवात को मांजकर नई स्याही भरें।
4. नई पेन/कलम लें।
5. पूजन करते समय भगवान महावीर स्वामी, श्री गौतम स्वामी, शारदा और लक्ष्मी का चित्र बाजोट पर पूर्व या उत्तर में स्थापित करें।
6. शुभ मुहूर्त्त में नई बहियों, कलम, दवात को किसी चौकी या पाटे पर पूर्व या उत्तर की ओर स्थापित करें।
7. इस पाटे के दाहिने ओर घी का दीपक और बायीं ओर धूप या अगरबत्ती रखें।
8. पूजन करने वालों के दाहिने हाथ की ओर दवात, नई कलम रखे। बहियों को तीन नवकार गिनकर लच्छा बांधे।
9. पूजन करने वालों को तीन नवकार गिनते हुए दाहिने हाथ की कलाई में मौली बांधें। फिर एक नवकार पढ़ते हुए कलम के भी मौली बांधें।
10. दीपावली पर्व पर उपवास, आयंबिल, एकासना आदि तप करें।
11. आतिशबाजी आदि का उपयोग नहीं करें। इससे महान् कर्मबंधन होता है। अतः यह सर्वथा त्याज्य है।
12. कुमारिका द्वारा सर्वपूजकों के कपाल पर कुंकुम का तिलक कर अक्षत लगावें।

नई बही के प्रथम पाने में सर्वप्रथम **ॐ अर्हम् नमः** लिखें। फिर एक से लेकर नौ, 9 आकारों में एक **श्री** से प्रारम्भ कर 9 **श्री** तक लिखें, इससे **श्री** का शिखर बन जाएगा। उसके नीचे रोली (कुंकुम) का (स्वस्तिक) बनायें, फिर उसके आजू-बाजू में **शुभ लाभ** इस प्रकार लिखें -

।।ॐ अर्हम् नमः।।
श्री
शुभ श्री श्री लाभ
श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री

फिर बही में लिखना प्रारम्भ करें :-

8	3	4
1	5	9
6	7	2

।।श्री महावीर स्वामिने नमः।।
।।श्री गुरू गौतम स्वामिने नमः।।
।।श्री जिनदत्त-चन्द्र-कुशल-चन्द्र गुरूभ्यो नमः।।
।।श्री सद्गुरूभ्यो नमः।।
।।श्री सरस्वत्यै नमः।।
श्री गुरूगौतमस्वामीजी जैसी लब्धि हो
श्री केसरियाजी जैसा भरपूर भंडार हो

श्री भरत चक्रवर्ती जैसी ऋद्धि हो
श्री बाहुबली जी जैसा बल हो
श्री अभयकुमार जी जैसी बुद्धि हो
श्री कयवन्नाजी सेठ जैसा सौभाग्य हो
श्री धन्ना शालिभद्रजी जैसी सम्पत्ति हो
श्री श्रेयांसकुमारजी जैसी दानवृत्ति हो
श्री जिनशासन की प्रभावना हो।

श्री वीर सं. 2546 श्री विक्रम सं. 2077 मिति कार्तिक वदि 14 शनिवार तारीख 14-11-2020 को श्री महालक्ष्मी देवी का पूजन शुभ मुहूर्त्त में किया।

बाद में स्वस्तिक पर नागरबेल का पान, लौंग, सुपारी, इलायची, रूपा नाणा आदि रखें। फिर अखंड जलधारा बही के चारों ओर देकर पू. गुरूदेव का अभिमंत्रित वासक्षेप, अक्षत, पुष्प, कुसुमांजलि हाथ में लेकर चोपड़ा के ऊपर कुसुमांजलि करें।

श्री शारदा (सरस्वती) पूजन-विधि

निम्नलिखित श्लोक एवं तत्पश्चात् मंत्र बोलें -

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमप्रभुः।
मंगलं स्थूलिभद्राद्या, जैन धर्मोस्तु मंगलम् ।।

मंत्र- ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्ध भरते मध्यखण्डे भारत देशे ..... नगरे ममगृहे श्री शारदादेवी आगच्छ आगच्छ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

आह्वान-ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

स्थापना- ॐ श्री शारदा देवी, मम गृहे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

संनिधान- ॐ श्री शारदा देवी, मम सानिध्यं कुरू कुरू स्वाहा, अत्र पूजां बलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

यह कहकर हाथ में ली हुई कुसुमांजलि चढ़ावें।

इस प्रकार स्तुति करने के पश्चात् श्री शारदा देवी की पूजन करें :-

पंचामृत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पंचामृतं समर्पयामि स्वाहा। (पंचामृत का छांटणा करें)

जल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै जलं समर्पयामि स्वाहा। (जल छांटणा करें)

चन्दन पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै हंसगामिन्यै लोकालोक-प्रकाशिकायै श्री सरस्वत्यै चन्दनं गन्धं समर्पयामि स्वाहा । (चन्दन के छांटणा करें)

पुष्प पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै पुष्पं समर्पयामि स्वाहा। (पुष्प चढ़ायें)

धूप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै धूपं समर्पयामि स्वाहा। (धूप करें)

दीप पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै दीपं समर्पयामि स्वाहा। (दीप करें)

अक्षत पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अक्षतं समर्पयामि स्वाहा। (अक्षत चढ़ायें)

नैवेद्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। (नैवेद्य चढ़ायें)

फल पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै फलं समर्पयामि स्वाहा। (फल चढ़ायें)

अर्घ्य पूजा- ॐ ह्रीँ श्री भगवत्यै केवलज्ञान स्वरूपायै लोकालोक-प्रकाशिकायै हंसगामिन्यै श्री सरस्वत्यै अर्घ्यं सर्वोपचारान् स्वाहा। (बाकी सब वस्तु चढ़ायें)

इस प्रकार द्रव्य पूजन करने के पश्चात् क्षमापना करें, बाद में श्री सरस्वती स्तोत्र का पाठ करें।

श्री सरस्वती स्तोत्र

तर्ज-हे नाथ तेरे चरणों...

हे शारदे मां हे शारदे मां।
हमें तार दे मां हे शारदे मां ।।
है रूप तेरा उज्ज्वल समुज्ज्वल।
सावन-सा रिमझिम गंगा-सा निर्मल।
जीवन का उपवन संवार दे मां,
हे शारदे मां.....।।१।।
अम्बर से विस्तृत चंदा-सी शीतल।
तुमसे प्रकाशित है सारा भूतल।
अमृत की बूंदें दो-चार दे मां,
हे शारदे मां.....।।२।।
मूरख भी पंडित गूंगा भी वक्ता।
तेरी कृपा से क्या हो न सकता।
अपनी कृपा को विस्तार दे मां,
हे शारदे मां.....।।३।।
साधु भी श्रावक भी तुमको ही ध्यावे।
तेरी अमी से निज भान पावे।
मणिप्रभ को वात्सल्य की धार दे मां,
हे शारदे मां.....।।४।।

उपर्युक्त स्तोत्र बोलने के बाद एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारें।

श्री सरस्वती माता की आरती

जय जय आरती माता तुम्हारी।
आलोकित हो बुद्धि हमारी।।1।।
कर में वीणा पुस्तक सोहे।
धवल कमल सिंहासन मोहे।।2।।
तुझ चरणों में आरती अर्पण।
निर्मल बुद्धि देना हर मन।।3।।
मात सरस्वती के गुण गाउँ।
'मणि' चिन्तामणि विद्या पाउँ।।4।।

फिर इस अष्टक का पाठ करें -

श्री गुरु गौतम स्वामी का अष्टक

अंगूठे अमृत वसे, लब्धि तणा भंडार।
श्री गुरु गौतम सुमरिये, वांछित फल दातार।।दोहा।।
त्रिपदी प्राप्त भगवंत से, द्वादश अंग विचार।
रचना घटि इक में करे, गुरु गौतम जयकार।।1।।
संयम जीसको भी दिया, हुआ केवली सार।
बोधिदान में कुशल वर, गुरू गौतम जयकार।।2।।
निज लब्धि से ही चढ़े, अष्टापद सुखकार।
बोधे जृंभक देव को, गुरु गौतम जयकार।।3।।
पन्द्रहसौ तापस तपे, दे प्रतिबोध उदार।
एक पात्र से पारणा, गुरु गौतम जयकार।।4।।
वीर प्रभु निर्वाण सुन, मंथन मनन अपार।
पाई केवल संपदा, गुरु गौतम जयकार।।5।।
जो चाहो सुख संपदा, इष्ट सिद्धि संसार।
सुबह शाम नित नित करो, गुरु गौतम जयकार।।6।।
चरणों में मैं नित करूँ, वंदन विधि अनुसार।
इष्ट सिद्धि वांछित फले, गुरु गौतम जयकार।।7।।
गौतम स्वामी को नमो, जाप करो हर बार।
'मणि' मन वंदन भाव से, गुरु गौतम जयकार।।8।।

उपर्युक्त गौतम अष्टक बोलने के बाद पूर्व या उत्तर दिशा सम्मुख होकर धूप-दीप करके एकाग्रचित्त से निम्नलिखित सरस्वती मंत्र की एक माला गिनें।

श्री सरस्वती मंत्र

ॐ ह्रीँ क्लीं श्रीं ह्रीँ ऐं सरस्वत्यै नमः

।।श्री महालक्ष्मी पूजन-विधि।।

श्री महालक्ष्मीजी मूर्ति, सिक्का, सोना, चांदी इत्यादि पूजन के लिए चांदी की थाली में बहुमान से स्थापित की जानी चाहिए।

मन्त्र और विधि

आह्वान- दो हाथ जोड़कर अनामिका अंगुली के मूल-पर्व को अंगूठे से जोड़ने से आह्वान मुद्रा होती है। इस मुद्रा से यह मंत्र बोलकर आह्वान करें-

1. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभांडागार-भरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

स्थापना- दोनों हथेलियों को नीचे की ओर उल्टा करने से स्थापन मुद्रा होती है। इस मुद्रा में यह मंत्र बोलें-

2. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार- भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु अत्र पूजने तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।
3. ॐ आर्यावर्ते अस्मिन् जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे दक्षिणार्द्धभरते मध्यखण्डे भारत देशे.....नगरे.....मम गृहे ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी। अक्षयभांडागार- भरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख-संपत्तिं कुरु कुरु पूजाबलिं गृहाण गृहाण स्वाहा।

अब महालक्ष्मी देवी का पूजन करें :

1. **जल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि ! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु जलं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
2. **गंध पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु, गंधं गृहाण गृहाण स्वाहा ।।
3. **पुष्प पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु पुष्पं गृहाण गृहाण स्वाहा।
4. **धूप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु धूपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
5. **दीप पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु दीपं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
6. **अक्षत पूजा**- ॐ आँ क्रौ ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु अक्षतं गृहाण गृहाण स्वाहा।।
7. **नैवेद्य पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु नैवेद्यं गृहाण गृहाण स्वाहा।
8. **फल पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि! मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु फलानि गृहाण गृहाण स्वाहा।।
9. **वस्त्र पूजा**- ॐ आँ क्रौं ह्रीँ महालक्ष्मि! चन्द्रमुखे! सौभाग्यदायिनी! अक्षयभाण्डागारभरपूरणि। मम ऋद्धिं सिद्धिं सुख संपत्तिं कुरु कुरु वस्त्रं गृहाण गृहाण स्वाहा।।

हाथ जोड कर बोलें-

नीर-गन्धाक्षतै र्पुष्पै-नैंवेद्यैर्धूप-दीपकैः।
फलैरर्घ्यं च अर्चामि, सर्वकार्यसुसिद्धये।।

पुष्पांजलि (समर्पित करना)

शान्तिः शान्तिकरः स्वामी, शान्तिधारां प्रवर्षति।
सर्व-लोकस्य शान्त्यर्थं, शान्तिधारां करोम्यहम्।।

जाति-चम्पकमालाद्यै - र्मोगरैः पारिजातकैः।
यजमानस्य सौख्यार्थे, सर्वविघ्नोपशान्तये।।

इस प्रकार द्रव्य पूजा के पश्चात् एक थाली में दीपक और कपूर जागृत करके आरती उतारनी चाहिए।

महालक्ष्मी माता की आरती

ओम जय लक्ष्मी माता, हो देवी जय लक्ष्मी माता।
संकट मेरे हर दो, झोली मेरी भर दो,
पाउँ सुखशाता ।।टेर।।
रखवाली तुम जिन शासन की, संघ सकल ध्यावे।
पहली आरती सिद्धि, दूजी सुख पावे।।1।।
छम-छम पायल घुंघरूँ बाजे, स्वर्ण कमल रचना।
पंखुड़ी शोक निवारे, घर बंधे पलना।।2।।
सूरि मंत्र है मंत्र शिरोमणि, महालक्ष्मी सेवा।
आरती श्रद्धा भावे, पावत शिव मेवा।।3।।
महर करो हे लक्ष्मी माता, आशिष दु:ख हरे।
घर आंगन में पधारो, भक्त पुकार करे।।4।।
आरती लक्ष्मी वंदन पूजन, ऋद्धि सिद्धि आवे।
मणिमय संपद् पावे, तन मन हरसावे।।5।।

इसके बाद मंत्र बोले :-

कर्पूरपूरेण मनोहरेण, सुवर्णपात्रान्तर-संस्थितेन।
प्रदीप्तभासा सह संगमेन, नीरांजनं ते जगदम्ब! कुर्वे।
।। ॐ श्रीं ह्रीँ क्लीं श्री महालक्ष्म्यै नम: ।।

तत्पश्चात् अक्षत और फूल लेकर कुबेर का पूजन करके कलश के ऊपर चढ़ावें।

आह्वामि देव! त्वाम् इहा याहि कृपां कुरु।
कोष-वर्द्धये नित्यं, त्वम् परिपक्ष सुरेश्वर।।
धनाध्यक्षाय देवाय, नरयानोपवेशिने।
नमस्ते राजराजाय, कुबेराय महात्मने।।

फिर काँटा-बाट हो तो तराजू में स्वस्तिक करके फूल चढ़ावें और काँटें पर नींबू लगावें।

नमस्ते सर्वदेवानां, शांतित्वे सत्यमाश्रिता।
साक्षिभूता जगद्धात्री, निर्मिता विश्वयोनिना।।

पूजन में अज्ञानतावश कोई दोष लगा हो, उसके लिए निम्नलिखित श्लोक पढ़ते हुए क्षमायाचना करनी चाहिए।

क्षमायाचना

आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मंत्रहीनं च यत्कृतम्।
तत्सर्व क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।1।।
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम्।
पूजाऽर्चां नैव जानामि, क्षमस्व परमेश्वरि ।।2।।
अपराधासहस्राणि, क्रियन्ते नित्यशो मया।
तत्सर्वं क्षम्यतां देवि, प्रसीद! परमेश्वरि।।3।।

इन श्लोकों द्वारा क्षमायाचना करें।

इति पूजनविधि

इस प्रकार पूजन करने के बाद अनाथ, अपंग, निराश्रित लोगों को यथाशक्ति द्रव्यादिक का दान करना चाहिए और साधर्मिक भाइयों की यथाशक्ति भक्ति का लाभ लेना चाहिए।

दीपावली के जाप

1. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी नाथाय नम:**

प्रथम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

2. **ॐ ह्रीँ श्री महावीरस्वामी सर्वज्ञाय नम:**

दूसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

3. **ॐ ह्रीँ श्रीं महावीरस्वामी पारंगताय नम:**

तीसरे प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

4. **ॐ ह्रीँ श्रीं गौतमस्वामी-केवलज्ञानाय नम:**

अंतिम प्रहर में इस मंत्र का जाप करना चाहिए।

इस मंत्र की 20 माला सूर्योदय से पहले चौथे प्रहर में फेरनी चाहिये। बाद में मंदिर में दर्शन-चैत्यवंदन एवं लड्डू चढ़ाने आदि की विधि करें। तत्पश्चात् गुरुदेव को वन्दन करना चाहिए तथा उनके मुखारविन्द से सप्त स्मरण व श्री गौतमरास को एकाग्रतापूर्वक श्रवण करना चाहिए।

गच्छाधिपतिश्री एवं आचार्यश्री का जहाज मंदिर में चातुर्मास प्रवेश हुआ

मांडवला 28 जून। श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट एवं जहाज मंदिर चातुर्मास समिति-2020 द्वारा जहाज मंदिर परिसर के प्रवचन हॉल में आयोजित पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज एवं आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी महाराज के मांडवला में नगर प्रवेश के साथ ही चातुर्मास प्रवेश आयोजन का शुभारंभ हुआ। सुबह मुनि मयंकप्रभसागरजी, मुनि मनितप्रभसागरजी, आर्य मेहुलप्रभसागरजी, नयज्ञसागरजी, मयूखप्रभसागरजी, महितप्रभसागरजी आदि मुनि तथा संघरत्ना प्रवर्तिनी साध्वी शशिप्रभाश्रीजी, साध्वी विमलप्रभाश्रीजी, साध्वी कल्पलताश्रीजी आदि अपनी शिष्या मंडली के साथ नगर भ्रमण कर जहाज मंदिर प्रांगण में प्रवेश किया।

गत वर्ष धूलिया महाराष्ट्र में चातुर्मास कर गुजरात एवं राजस्थान के अनेक गांवों में धर्मप्रचार व पदयात्रा करते हुए पहुंचे आचार्य भगवंत श्रीमद् जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज के 48वें चातुर्मास के लिए मांडवला में नगर प्रवेश पर श्री जैन संघ मांडवला ग्रामवासियों ने स्वागत किया।

प्रवेश के पश्चात शासकीय आदेशों की अनुपालना करते हुए प्रवचन मण्डप में जिनशासन गान एवं गुरूवन्दना तथा आचार्य भगवंत द्वारा मंगलाचरण किया गया। चातुर्मास भूमिका एवं संचालन जहाज मंदिर के मंत्री सूरजमल देवडा धोका खंडप निवासी ने किया। इस अवसर पर गुरुपूजन बाडमेर निवासी मदनलाल सगतमल मालु परिवार के रमेशकुमार मालु ने किया। काम्बली ओढाकर पूज्यवरों का सम्मान बाबुलाल जगदीशचंद लुणिया परिवार के सुनीलकुमार लुणिया परिवार ने किया।

मंगल प्रार्थना के साथ धर्मसभा को संबोधित करते हुए आचार्यश्री ने अपने संक्षिप्त उद्बोधन में कहा कि- गुरु महाराज श्री जिनकांतिसागरसूरिजी महाराज की समाधि भूमि पर हमें गुरुदेव के साथ इसी मांडवला ग्राम में सन् 1985 की स्मृतियां आ रही है। उनका स्वर्गवास इसी मांडवला ग्राम में हुआ। और उनकी समाधि पर विश्व का पहला जहाज मंदिर बना।

इस चातुर्मास में स्वाध्याय और साधना पर विशेष ध्यान देने का कहते हुए कहा कि यह अवसर स्वयं को अध्यात्म में ले जाने का अवसर है। आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरिजी महाराज ने कहा कि 30 साल बाद मेरा यह चातुर्मास मेरे बडे गुरुभ्राता के साथ हो रहा है। जिसका मुझे अपार हर्ष है। गुरु महाराज की समाधि पर रहने का अवसर मुझे बडे ही सौभाग्य से मिला है। सभा को मुनि मनितप्रभसागरजी, प्रवर्तिनी शशिप्रभाश्रीजी, साध्वी कल्पलताश्रीजी, साध्वी विश्वरत्नाश्रीजी ने भी संबोधित किया।

इस अवसर पर श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट के कार्यकारी अध्यक्ष द्वारकादास डोसी, मंत्री सूरजमल देवडा धोका, रामरतन छाजेड, धर्मेन्द्र पटवा, दीपचंद कोठारी, रिखबचंद मंडोवरा, पुरुषोतम सेठिया, पारसमल बरडिया, मांगीलाल संकलेचा, भोजन समिति के मांगीलाल मालु, राजु गुलेच्छा, अतिथियों में बाडमेर नगरपालिका के पूर्व सभापति लूणकरण बोथरा, रतनलाल वडेरा, रतनलाल संकलेचा, शंकरलाल धारिवाल, रमेश मालु, जगदीश भंसाली आदि गुरुभक्त उपस्थित थे।

-प्रकाश छाजेड, प्रचार संयोजक

खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा साधर्मिक सहायता योजना प्रारम्भ

गत 100 वर्षों की सबसे खतरनाक महामारी कोविड 19 ने पूरे विश्व के प्राणियों के जीवन को अस्त व्यस्त कर दिया है। हम सभी ने अपने कई साथियों को खो दिया है, संक्रमित परिवारों को इलाज में बड़ी राशि का भुगतान करना पड़ रहा है एवं लंबे समय तक व्यवसाय बन्द होने के कारण मध्यम व कमजोर वर्ग के आर्थिक भविष्य पर प्रश्न चिन्ह खड़े कर दिए हैं। इस अति असहाय एवं अनिश्चित परिस्थिति से हमारे साधर्मिक भाइयों को भी अभूतपूर्व कठिनाइयों से जूझना पड़ रहा है।

हमारे संघ के जिम्मेदार एवं दयालु श्रावकों तथा स्थानीय संघों ने अपने स्तर पर सहयोग का हाथ बढ़ाकर जरूरतमंदों को सहायता प्रदान करने का भरपूर प्रयत्न किया है। इस विकट घड़ी में हम सभी का यह कर्तव्य बनता है कि में हम अपने साधर्मिक भाइयों को दीर्घकालीन राहत प्रदान करने का कार्य करें।

प. पू. खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म. सा. ने अपने संदेश में फरमाया है कि शास्त्रानुसार साधर्मिक शुश्रूषा का फल मोक्ष है। खरतरगच्छाधिपतिश्री की प्रेरणा से प्रतिनिधि महासभा ने श्री जिनदत्त-कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी के साथ मिलकर 'साधर्मिक के सहायक बनो' योजना प्रारम्भ करने का निर्णय लिया।

इस योजना के अंतर्गत जरूरतमंद साधर्मिक परिवारों की बुनियादी आवश्यकता हेतु सहायता प्रदान की जा रही है। इस योजना को स्थानीय संघों एवं अ. भा. खरतरगच्छ युवा परिषद के सहयोग से क्रियान्वित किया जा रहा है।

एक साधर्मिक परिवार का सहायक बनने का नकरा 51000 रूपये रखा गया है। आइये आप भी इस योजना से जुड़िये और साधर्मिक के घर का दीपक जलाने में सहयोगी बनिये ।

साधर्मिक सहायता योजना समिति

श्री प्रकाशचंद कानूगो-संयोजक, श्री मोहनचंद ढढा चेन्नई, श्री तेजराज गोलेछा बेंगलूरू, श्री प्रकाशचंद सुराणा रायपुर, श्री भंवरलाल छाजेड़ मुम्बई, श्री पदम कुमार टाटिया चेन्नई, श्री दीपचंद बाफना अहमदाबाद, श्री रतनचंद हालावाला अहमदाबाद, श्री वंशराज भंसाली अहमदाबाद, श्री बाबूलाल पालरेचा होसपेट, श्री गजेंद्र भंसाली उदयपुर, श्री कुशलराज गुलेच्छा बैंगलुरु, श्री गौतम हालावाला सूरत, श्री संतोष गोलेछा रायपुर, श्री रतन बोथरा दिल्ली, श्री विश्वास जैन जयपुर, श्री विजयराज लोढा कोलकता, श्री पदम बरडिया दुर्ग, श्री सुरेश लूणिया चेन्नई, श्री सुनील गांग उज्जैन, श्री प्रदीप पारख इरोड, श्री अरुण ललवानी इचलकरंजी।

केयुप की नई शाखाओं का गठन

खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराजा की प्रेरणा से अखिल भारतीय खरतरगच्छ युवा परिषद् के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री सुरेशकुमार लुनिया की अध्यक्षता में सेतरावा (राजस्थान) एवं सोमेसर (राजस्थान) में शाखाओं का गठन दिनांक 1/09/20 को किया गया।

केयुप सेतरावा के नवगठित पदाधिकारी- श्री पारसमलजी लोढ़ा अध्यक्ष, श्री लालचन्दजी गोलेच्छा उपाध्यक्ष, श्री जसराजजी लोढ़ा महामंत्री, श्री झुमरमलजी लोढ़ा कोषाध्यक्ष।

केयुप सोमेसर के नवगठित पदाधिकारी- श्री जितेन्द्रजी दुगड अध्यक्ष, श्री मदनलालजी दुगड उपाध्यक्ष, श्री अमृतलालजी दुगड महामंत्री, श्री विजयराजजी श्रीश्रीमाल कोषाध्यक्ष। शाखाओं के गठन में सेतरावा संघ, सोमेसर संघ, केयुप जोधपुर अध्यक्ष श्री दीपकजी धारीवाल, केयुप वैयावच्च प्रकोष्ठ संयोजक श्री रमेशजी मालू, श्री सुनीलजी बाड़मेर की गरिमामय उपस्थिति रही। सभी नवनियुक्त पदाधिकारियों को हार्दिक शुभकामनाएं।

दादा गुरुदेव जिनदत्तसूरि 12वीं शताब्दी के ऐतिहासिक आचार्य थे

जहाज मंदिर मांडवला 1 जुलाई 2020। आज जहाज मंदिर परिसर में पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. सा. आदि 37 साधु साध्वियों के सानिध्य में दादा गुरुदेव श्री जिनदत्तसूरि की 866वीं पुण्यतिथि मनाई गई।

इस अवसर पर साधु साध्वियों के बीच प्रवचन देते हुए पू. गच्छाधिपति आचार्य श्री ने कहा- गुरुदेव जिनदत्तसूरि ने आज से 850 से 900 वर्ष पूर्व भारत वर्ष में स्थान-स्थान पर भ्रमण करके संस्कारों की अलख जगाई थी। उन्होंने उस समय में लाखों परिवारों को शराब, जुआ आदि दुर्गुणों व व्यसनों से दूर किया था।

उन्होंने अपने इस संस्कार अभियान में जाति या वर्ण व्यवस्था का कोई भेद नहीं था। उनसे संस्कार पाने में क्षत्रिय, वैश्य, ब्राह्मण, शूद्र सभी जाति के लोग थे।

उन्होंने कहा- वर्तमान वातावरण में वैसी ही अलख जगाने की अनिवार्यता उपस्थित हो गई है। युवा पीढी लगातार व्यसनों के चंगुल में फंस कर अपना जीवन नष्ट कर रही है। सभी धर्माचार्यों को समस्त प्रकार की साम्प्रदायिक कट्टरताओं का त्याग कर एक होकर संस्कारों को जगाने का अभियान चलाना चाहिये।

पू. मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- दादा गुरुदेवों के उपकारों का हमें स्मरण कर हमें कुलीनता और कृतज्ञता इन गुणों का विकास करना चाहिये। उन्होंने व्यसन मुक्ति का जो कार्य किया, उसे और गतिमान करना चाहिये।

पू. मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म. ने दादा गुरुदेव की रचनाओं का इतिहास बताया। उन्होंने कहा- उनका जीवन त्याग और साधना को पूर्ण रूप से समर्पित था।

इस अवसर पर पू. मुनि श्री नयज्ञसागरजी म., पू. मुनि श्री महितप्रभसागरजी म., पू. साध्वी अनंतदर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी मयूरप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी अर्हंनिधिश्रीजी म. ने अपने विचार प्रस्तुत किये।

यह जानकारी जहाज मंदिर ट्रस्ट के कोषाध्यक्ष प्रकाश छाजेड ने दी।

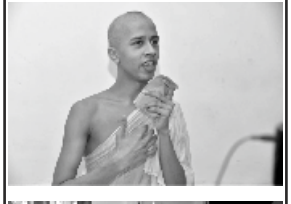

जिनहरि विहार में पर्युषण संपन्न

पालीताना 22 अगस्त। श्री सिद्धाचल महातीर्थ की धरा पर श्री जिनहरि विहार धर्मशाला में पर्युषण महापर्व की आराधना हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई। पूज्य गुरुदेव खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज साहब के आज्ञावर्ती पूज्य मुनिराज श्री मुक्तिप्रभसागरजी एवं मनीषप्रभसागरजी म.सा. आदि ठाणा 11 एवं पूजनीया महत्तरा श्री दिव्यप्रभाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया गणिनीवर्या श्री सुलोचनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री प्रियदर्शनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री अमितगुणाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री श्रद्धांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री आज्ञांजनाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वीवर्या श्री समदर्शिताश्रीजी म.सा. आदि ठाणा की निश्रा में पर्व का उल्लास विशेष रूप से रहा।

पूज्य मुनिराज श्री मनीषप्रभसागरजी म. एवं कल्पसूत्र पर पूज्य मुनिश्री विरक्तप्रभसागरजी महाराज ने प्रथम बार आठ दिन तक लगातार प्रवचन देकर सभी को भाव-विभोर कर दिया।

पूज्य बालमुनि मलयप्रभसागरजी म. ने छठ-अठम की तपस्या, तपोरत्ना साध्वी श्री सुलक्षणाश्रीजी म. ने अठाई तपस्या की।

चातुर्मास के मुख्य लाभार्थी संघवी श्री अशोककुमार मानमलजी भंसाली ने दस दिन सपरिवार उपस्थित रहकर प्रवचन श्रवण व वैयावच्च का लाभ लिया। पर्युषण के दौरान समस्त आयोजनों का संचालन श्री जिनहरि विहार समिति के मंत्री बाबुलालजी लूणिया ने किया। प्रवचन में शासकीय आदेश के अनुसार इंतजाम किए गए।

चौहटन में दो दीक्षाऐं, दो बडी दीक्षाऐं संपन्न

चौहटन 4 मार्च। पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य नूतन आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा., पूज्य मुनि श्री मयंकप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मेहुलप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री कल्पज्ञसागरजी म., पूज्य मुनि श्री नयज्ञसागरजी म., पूज्य मुनि श्री मयूखप्रभसागरजी म., पूज्य मुनि श्री महितप्रभसागरजी म. ठाणा की पावन निश्रा एवं पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. आदि ठाणा, पूजनीया साध्वी श्री कल्पलताश्रीजी म. आदि ठाणा के सानिध्य में बाडमेर जिले के चौहटन नगर में कुमारी रेखा सेठिया एवं कुमारी नेहा बोथरा की भागवती दीक्षा ता. 4 मार्च 2020 को अत्यन्त उल्लास भरे वातावरण में संपन्न हुई।

चौहटन निवासी श्री सुरेशकुमारजी सेठिया सौ. उषादेवी की सुपुत्री रेखा सेठिया पिछले 4 वर्षों से पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की निश्रा में संयम जीवन की शिक्षा ग्रहण कर रही थी। इसी प्रकार चौहटन निवासी श्री गौतमचंदजी

बोथरा सौ. उषादेवी की सुपुत्री नेहा बोथरा भी पिछले 2 वर्षों से पूज्य साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. के सानिध्य में वैराग्य का पोषण कर रही थी।

दीक्षा महोत्सव हेतु पूज्य आचार्यश्री का मंगल प्रवेश ता. 1 मार्च 2020 को हुआ। पूज्यश्री ने इस अवसर पर दीक्षा की महिमा सुनाई।

ता. 3 मार्च को भव्य वरघोडा आयोजित हुआ। ता. 4 मार्च को प्रव्रज्या का मंगल विधान संपन्न हुआ। इस अवसर पर पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री ने संयम की महिमा बताते हुए कहा- तीर्थंकर जैसी महान् आत्मा को भी केवलज्ञान प्राप्त करने के लिये चारित्र लेना ही होता है। ज्योंहि तीर्थंकर परमात्मा चारित्र धारण करते हैं त्योंहि उन्हें चौथा मन:पर्यव ज्ञान उपलब्ध हो जाता है, यह चारित्र की प्रत्यक्ष महिमा है।

पूज्य मुनि श्री मनितप्रभसागरजी म. ने कहा- आत्मा का कल्याण करने के लिये एक मात्र उपाय संयम है। इन्द्रियों के सुख के पीछे अनादि काल हमने गंवाये हैं। असली सुख आत्मा में ही है। उसे प्राप्त करने के लिये संयम का पुरुषार्थ अनिवार्य है।

कुमारी रेखा सेठिया व कुमारी नेहा बोथरा ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए संयम की दृढ़ता का वर्णन किया। और जब शुभ मुहूर्त्त में पूज्यश्री ने दोनों मुमुक्षु बहिनों के हाथ में रजोहरण अर्पण किया तो उनके हर्ष का कोई पार नहीं रहा।

विधि विधान के पश्चात् क्रमश: दोनों को नये नाम दिये गये- साध्वी ऋजुप्रज्ञाश्रीजी एवं साध्वी नम्रप्रज्ञाश्रीजी!

दोनों साध्वीजी म. को पू. साध्वी श्री विमलप्रभाश्रीजी म. की शिष्या घोषित किया गया।

इसी अवसर पर नूतन साध्वी श्री पर्वप्रभाश्रीजी म. एवं साध्वी श्री सहजप्रज्ञाश्रीजी म. को बडी दीक्षा प्रदान की गई। यह ज्ञातव्य है कि पू. साध्वी श्री पर्वप्रभाश्रीजी म. की दीक्षा बालोतरा नगर में ता. 7 फरवरी 2020 को एवं पू. साध्वी श्री सहजप्रज्ञाश्रीजी म. की दीक्षा बाडमेर नगर में ता. 26 फरवरी 2020 को संपन्न हुई थी।

इस अवसर पर मुमुक्षु रजत सेठिया एवं मुमुक्षु शुभम् सिंघवी ने अपने भाव व्यक्त करते हुए प्रार्थना की कि जल्दी ही चारित्र हमारे जीवन में उदित हो। मुमुक्षु रविना सेठिया एवं मुमुक्षु माधुरी चौपडा ने भी अपने भाव व्यक्त किये।

इस अवसर पर बाडमेर, तिरूपातूर, धोरीमन्ना, बालोतरा आदि क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित थे। इस दीक्षा महोत्सव का आयोजन करने के लिये श्री जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक श्री संघ चौहटन में अपार उत्साह था। आयोजन समिति का गठन किया गया था, जिसके संयोजक श्री मदनलालजी मालू बने थे। अनेक समितियों व उपसमितियों का गठन किया गया था। पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री के उपदेशों से चौहटन श्री संघ में जो मतभेद चल रहा था, वह समाप्त हो जाने से महोत्सव में चार चांद लग गये थे। पूरा सकल श्री संघ सम्मिलित हुआ था।

चौहटन जैन समाज में एकता हुई

चौहटन 3 मार्च। पिछले लम्बे समय में चौहटन श्री संघ में परस्पर मनमुटाव चल रहा था। पूज्य गुरुदेव गच्छाधिपति आचार्यश्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. पूज्य आचार्य श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.सा. आदि साधु साध्वीजी भगवंतों की पावन निश्रा में उनकी प्रेरणा व उपदेशों से श्री संघ में एकता की स्थापना हो गई।

श्री संघ में एकता हो जाने से पूरे संघ एवं आसपास के सकल श्री संघों में आनंद की अनूठी लहर छा गई। इस अवसर पर पूज्य गच्छाधिपति आचार्यश्री ने फरमाया- श्री संघ में आज जो एकता बनी है, यह हमेशा-हमेशा के लिये बनी रहनी चाहिये। मतभेद हो सकते हैं, पर अलग होने का विचार भविष्य में कभी भी मत करना।

आपकी यह एकता सदा-सदा बनी रहे, यही गुरुदेव से प्रार्थना है।

खिमेल में शिलान्यास संपन्न

खिमेल 11 मार्च। मरुधरमणि अवंति तीर्थोद्धारक परम पूज्य खरतरगच्छाधिपति आचार्य भगवंत श्री मज्जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. की आज्ञा से परम पूज्य वशीमालानी रत्नशिरोमणि ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य श्रीजिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में दि. 11 मार्च को खिमेल (गोडवाड़) की पुण्य धरा पर श्री श्वेताम्बर खरतरगच्छ जैन संघ खिमेल द्वारा प्राचीन दादावाड़ी के शिलान्यास का महोत्सव सुसम्पन्न हुआ।

इस महोत्सव में बीकानेर केयुप के सदस्यों ने भी अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

जहाज मंदिर में तपस्या

पू. साध्वी
श्री दीपशिखाश्रीजी म.सा.

मांडवला 22 अगस्त। जहाज मंदिर में चल रहे श्रुत साधना चातुर्मास के अन्तर्गत तपस्या का अनूठा ठाट लगा। जिसमें पूजनीया प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी म. सा. की निश्रावर्तिनी पू. साध्वीवर्या श्रुतदर्शनाश्रीजी म. द्वारा वर्धमान तप की पचासवीं ओली की तपस्या एवं साध्वी पू. साध्वी श्री शीलगुणाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री अनंतदर्शनाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री जागृतदर्शनाश्रीजी म. द्वारा 8 उपवास की तपस्या की गई।

पूजनीया साध्वी वर्या श्री विमलप्रभाश्रीजी म. सा. की निश्रावर्तिनी पू. साध्वी श्री

पू. साध्वी श्री
शीलगुणाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
विनीतयशाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
अनंतदर्शनाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
चारुलताश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
नूतनप्रियाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
मयूरप्रियाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
जागृतदर्शनाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
पर्वप्रभाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
ऋजुप्रज्ञाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
नम्रप्रज्ञाश्रीजी म.सा.

पू. साध्वी श्री
श्रुतदर्शनाश्रीजी म.सा.

चारुलताश्रीजी म., पू. साध्वी श्री नूतनप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री मयूरप्रियाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री पर्वप्रभाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री ऋजुप्रज्ञाश्रीजी म., पू. साध्वी श्री नम्रप्रज्ञाश्रीजी म. द्वारा 8 उपवास की तपस्या की गई।

पूजनीया साध्वीवर्या कल्पलताश्रीजी म. सा. की निश्रावर्तिनी साध्वी श्री दीपशिखाश्रीजी म.सा. द्वारा 15 उपवास की दीर्घ तपस्या एवं पू. साध्वी श्री विनीतयशाश्रीजी म. द्वारा 8 उपवास की तपस्या की गई।

साथ ही श्री दिनेशकुमारजी टिमरेचा मोकलसर, श्री स्वरूप बोहरा झिंझनीयाली, श्री प्रवीण मालू बाडमेर, सुश्री रविना सेठिया चौहटन, सुश्री माधुरी चौपडा सिवाना, सुश्री कोमल धारिवाल चौहटन, सुश्री हरिशा ललवाणी सिवाना, श्रीमती मंजूदेवी बागरेचा बालोतरा द्वारा 8

श्री दिनेशकुमारजी
टिमरेचा, मोकलसर

श्री स्वरुप बोहरा
झिंझिनयाली

श्री प्रवीण मालू
बाड़मेर

सुश्री रवीना सेठिया
चौहटन

सुश्री माधुरी चौपड़ा
सिवाना

सुश्री कोमल धारीवाल
चौहटन

सुश्री हरिशा ललवाणी
सिवाना

श्रीमती मंजूदेवी बागरेचा
बालोतरा

मुमुक्षु महावीर रमेशजी
बोहरा, धोरीमन्ना
(वर्धमान तपपाया)

सुश्री वर्षा सेठिया
चौहटन (छठ अठम)

उपवास की तपस्या की गई।

मुमुक्षु महावीर रमेशजी बोहरा धोरीमन्ना द्वारा वर्धमान ओली का प्रारंभ किया गया।

मुमुक्षु कु. निशा बोथरा का मासक्षमण

जहाज मंदिर में संवत्सरी के पारणे के साथ मुमुक्षु कु. निशा बोथरा सुपुत्री बाबुलालजी बोथरा के मासक्षमण का पारणा शातापूर्वक संपन्न हुआ।

प्रवर्तिनी श्री शशिप्रभाश्रीजी के निर्देशन में अभ्यासरता कु. निशा ने तपस्या के दौरान प्रतिदिन सामायिक, प्रतिक्रमण, प्रभुपूजादि के साथ स्वाध्याय का क्रम जारी रखा।

लघुवय में तपस्या के द्वारा अनेकगुणा लाभ प्राप्त करने वाली कु. निशा का पूज्य गच्छाधिपतिश्री, पूज्य आचार्य श्री एवं विशाल साध्वी मंडल के सानिध्य में जहाज मंदिर ट्रस्ट मंडल की ओर से अभिनंदन पत्र के साथ स्वर्ण शृंखला द्वारा बहुमान किया गया।

तपस्या करने वालों की अनुमोदना

भारत जैन महामण्डल आयोजित सामूहिक क्षमापना समारोह चारों सम्प्रदायों के आचार्यों ने दिया प्रेरणा पाथेय

मुंबई 6 सितंबर। भारत जैन महामण्डल द्वारा विश्व मैत्री दिवस सामूहिक क्षमापना समारोह का आयोजन किया गया। संगीतकार व गायक अनिल गेमावत, अक्षय गेमावत व पूजा गेमावत द्वारा तीर्थंकरों की स्तुति के साथ ही विश्व मैत्री दिवस का आगाज हुआ। यह समारोह झूम एप, फेसबुक आदि द्वारा प्रसारित किया गया।

इस समारोह को श्वेतांबर सम्प्रदाय से खरतरगच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. ने, दिगम्बर संप्रदाय से आचार्य श्री पुलकसागरजी म. ने, तेरापंथ संप्रदाय की ओर से आचार्य श्री महाश्रमणजी म. ने तथा स्थानकवासी संप्रदाय से श्री नम्रमुनिजी म. ने संबोधित किया।

गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी महाराज ने फरमाया कि जैन धर्म में अनेक प्रतिभाएं हैं, दान पुण्य में जैन धर्मावलम्बी सदैव अग्रणी रहते हैं। भले ही स्कूल निर्माण हो या हॉस्पिटल या धर्मशालाओं का निर्माण सब में जैन समाज का योगदान पूर्ण रूप से देश को प्राप्त होता है। भूकंप जैसी आपदाओं में जैन समाज पूरे देश की सेवा करता है। अभी कोरोना काल में जैनों की सेवाओं को देश विदेश में सराहा जा रहा है। लेकिन एकता के अभाव में जैनों की आवाज बुलंद नहीं हो रही। आज जैन धर्म में 18 हजार साधु साध्वियों की विशाल शृंखला है। और किसी संप्रदाय के पास ऐसे त्यागी, अपरिग्रही, पांच महाव्रत धारी साधु नहीं हैं। लेकिन आपस में बंटे हुए हैं, किसी भी पंथ के साधु साध्वियों को देख हमारे मन में श्रद्धा व समर्पण के भाव उमड़ने चाहिए, यह नहीं होना चाहिए कि ये तो दिगम्बर है, ये श्वेताम्बर है, ये तपागच्छ है, ये खरतरगच्छ है, ये तेरापंथी या स्थानकवासी है। होना ये चाहिए कि सभी जैन साधु संत है, सभी को देख मन में श्रद्धा की भावना उमड़नी चाहिए।

उन्होंने उदाहरण देते हुए कहा- एक विशाल नाव में हम अलग-अलग खण्ड बना कर बैठ गए हैं। किसी भी खण्ड में छिद्र होता है तो पूरी नाव के डूबने का खतरा हो जाता है। यदि किसी खण्ड में छेद होने पर दूसरे खण्ड वाले प्रसन्न होते हैं तो यह उनकी मूर्खता है। क्योंकि नाव एक है। उन्होंने कड़वा पटेल व लहुआ पटेल के युवाओं के प्रयास से हुई एकता का उत्कृष्ट उदाहरण दिया। उन्होंने कहा कि जैनों के महावीर एक है, सिद्धांत एक है मंत्र एक है, सारे तीर्थंकर एक है फिर मामूली क्रियाओं के फर्क से अनेकता क्यों बल्कि एकता प्रदर्शित होनी चाहिए। इसके लिए सकारात्मक सोच को विकसित करना होगा।

इस अवसर पर दिगम्बर जैन संघ के मुनिश्री पुलकसागरजी ने फरमाया कि आज दुनिया में बम हथियार बनाने की होड़ लगी हुई है। इस आपसी तनाव के चलते दुनिया बारूद के ढेर पर बैठी है। हथियारों से कभी शांति स्थापित नहीं होनी है। शांति भगवान महावीर के जिओ और जीने दो के सिद्धांतों के अमलीकरण से ही पनप पाएगी।

आपने कहा कि हम जैन धर्मावलम्बी छोटे छोटे मुद्दों पर बिखरे हुए है कोई दिगम्बर तो कोई श्वेताम्बर, कोई मूर्तिपूजक तो कोई स्थानकवासी व तेरापंथ के रूप में बंटे हुए है। हम सभी के तीर्थंकर तो एक ही थे, अहिंसा, दया, करुणा तमाम सिद्धांत एक है। हम क्रियाओं में बंट गए, जरूरत है हम दिलों से जुड़ें।

अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए तेरापंथ धर्म संघ के ग्यारवें पट्टधर आचार्य श्री महाश्रमणजी ने फरमाया की पर्युषण पर्ण, दसलक्षण पर्व आदि पर्व मन में जमा कटुता रूपी मैल को धोने का पर्व है, सब जीवों से मैत्री बढ़ाने का पर्व है, मैत्री पर्व समता व सह अस्तित्व की भावना से ओतप्रोत पर्व हैं।

आपने कहा कि जैन धर्म संख्या की दृष्टि से भले ही छोटा हो लेकिन श्रेष्ठ सिद्धांतों व संस्कारों की सम्पदा से पोषित धर्म है, अहिंसा इस धर्म का प्राण तत्त्व है।

राष्ट्र संत श्री नम्र मुनि ने कहा कि श्रावकों के दिल हमेशा खुले होते है। श्रावकों के साथ सन्तों में भी एकता हो। वर्तमान के दौर में लोगों में क्राइसेस बढ़ती जा रही है अत: क्राइसेस को क्रिएशन में बदलें तथा अपसेट की स्थिति में अपग्रेड हो व प्रोब्लम को प्रोग्रेस में बदलें।

आपने कहा कि समाज संगठन व व्यक्ति किसी भी मुद्दे पर उलझने की बजाए हार्ट रुम बनाये न कि कोर्ट रूम। जब हम किसी को गुनाहगार घोषित करते है तो क्षमापना का कोई औचित्य नहीं रहता। समापना के अवसर पर एक दूसरे को रेसपेक्ट दें। हम दूसरों को भूलों को गिनीज बुक में सम्मिलित करने हेतु प्रयास रहते है और अपनी भूलों को स्वीकारते भी नहीं हैं।

मोतीलाल ओसवाल, डीसी जैन, शैलेश लोढा ने भी अपने मन के उद्‌गार प्रकट किए। इस अवसर पर कार्यकारी राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री मदनलाल मुठलिया ने सभी अतिथियों का स्वागत किया, राष्ट्रीय महासचिव श्री राजेश वर्धन ने कार्यक्रम का संचालन किया। आभार राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री गणपत कोठारी ने व्यक्त किया। इस समारोह को देश भर के महामंडल सदस्यों एवं हजारों गुरु-भक्तों ने निहारा।

पाटण दादावाड़ी का सौन्दर्यकरण

खरतरगच्छ नामकरण स्थली पाटण नगर की प्राचीन दादावाड़ी का सौन्दर्यकरणका कार्य प्रारंभ किया गया है। जीर्णोद्धार श्री जिनदत्त कुशलसूरि खरतरगच्छ पेढ़ी द्वारा कराया जा रहा है।

इस प्रबन्ध के अंतर्गत बाउंडरी वॉल, फर्श आदि का कार्य संपन्न होगा। पेढ़ी के कोषाध्यक्ष श्री दीपचंदजी बाफना अहमदाबाद के निर्देशन में यह कार्य गतिमान है।

जहाज मंदिर गौशाला का मुहूर्त्त

मांडवला 17 जून 2020। श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट के तत्वावधान में श्री रतनमणि गौशाला का शुभ मुहूर्त्त पू. गच्छाधिपति गुरुदेव आचार्य प्रवर श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी महाराज साहेब की पावन प्रेरणा से किया गया।

इस अवसर पर गोशाला के संयोजक सूरजमल देवडा धोका, पारसमल बरडिया, रामरतन छाजेड, जुगराज गुलेच्छा आदि बडी संख्या में समाजसेवी उपस्थित थे।

शुभ मुहूर्त्त करते हुए संयोजक सूरजमल देवडा ने बताया कि अतिशीघ्र इस गोशाला का निर्माण किया जायेगा। जिसमें सौ से अधिक गायों की सुव्यवस्था पहले चरण में की जायेगी। इसके लिये विशाल टांका, गायों के लिये शेड, चारे के लिये बडा गोदाम, पानी के अवाडे आदि का निर्माण किया जायेगा।

पू. आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. ने कहा- जीवदया पुनीत धर्म है। जीवों की रक्षा करना प्रत्येक भारतीय व्यक्ति का कर्तव्य है।

सादर श्रद्धांजलि

साध्वी समदर्शिताश्रीजी म.सा.

पालीताना 28 अगस्त। श्री जिनहरि विहार धर्मशाला पालीताना में बिराजित पूज्या साध्वी श्री मनोहरश्रीजी म.सा. की शिष्या साध्वी समदर्शिताश्रीजी म. सा. का दिनांक 28 अगस्त 2020 को स्वर्गवास हो गया। पिछले लगभग 15 वर्षों से आप जिनहरि विहार समिति ने आपकी सेवा की। आप सरल स्वभावी साध्वी थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री दलीचंदजी भंसाली झाब

जालोर जिले के झाब गांव निवासी श्री दलीचंदजी भंसाली आचरण से तो अत्यंत सादगीपूर्ण व्यक्तित्व थे, किन्तु समाज और शासन के प्रति उनका समर्पण इतना ऊंचा है कि जिसे उल्लेखनीय कहा जा सकता है।

श्री दलीचंदजी भंसाली का आकस्मिक समाधीपूर्ण अरिहंतशरण हुआ, जो झाब नगर एवं जैन समाज के लिए बहुत बड़ी अपूरणीय क्षति है।

आप द्वारा गांव के बाजार चौहटे के मध्य निर्मित भव्य जैनमंदिर ऐसे सुशोभित होता है, जैसे किसी देव का विमान खडा हो। जनता जनार्दन की समस्या को देखते हुए, आज से 36 साल पहले गांव में अस्पताल का निर्माण करवाया। आपने कई तीर्थों पर महत्वपूर्ण लाभ भी लिया। 78 साल की आयु में आपकी फुर्ती देखते ही बनते थी। समय के पाबंद और नियमबंद जीवन जीने में विश्वास करते थे। –संघवी अमृतलाल पुखराजजी कटारिया (बालोतरा-मुंबई)

श्री कन्हैयालालजी भंसाली

फलोदी राजस्थान निवासी श्री कन्हैयालालजी भंसाली का स्वर्गवास हो गया। गच्छाधिपति आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरिजी म. सा. के सुशिष्य मुनि श्री मनीषप्रभसागरजी म.सा. के सांसारिक पिताजी श्री भंसाली सरल स्वभाव के धनी थे। नित्य जिनदर्शन करने वाले श्री भंसाली अपने जीवन में सुकृत अनुमोदनार्थ जीवित महोत्सव में जीव राशि क्षमापना की थी। दिवंगत आत्मा शीघ्रमोक्षगामी बने।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से सादर श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री गेवरचंदजी मुसर्रफ, बीकानेर

बीकानेर 25 अगस्त। जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ के पूर्व मंत्री और पापड़ भुजिया मैन्यूफैक्चरिंग एसोसिएशन बीकानेर के अध्यक्ष, दादा गुरुदेव के परम भक्त श्री गेवरचंद मुसरफ को दिल्ली की फोर्टिस अस्पताल में निधन हो गया। मुसरफ 68 साल के थे।

जैन श्वेताम्बर खरतरगच्छ संघ बीकानेर के मंत्री के रूप उन्होंने जैन समाज के मंदिरों व दादाबाड़ियों के जीर्णोद्धार का कार्य किया। मुसरफ ने गंगाशहर की रेल दादाबाड़ी व नाल दादाबाड़ी में अमावस्या को पूजा व प्रसाद के नियमित आयोजन का सिलसिला शुरू किया। उन्होनें रेल दादाबाड़ी में दरवाजा निकालने, नियमित सफाई व पूजा करवाने की भी व्यवस्था की। मुसरफ को अनेक सामाजिक एवं स्वयं सेवी संस्थाओं की ओर से सम्मानित भी किया गया। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

श्री अभयकुमारजी हालावाले

हाला वाले बाडमेर निवासी श्री अभयकुमारजी का स्वर्गवास दिनांक 29 सितंबर को बाडमेर हो गया। धर्मभावना से युक्त स्वभाव से अभयकुमारजी के निधन से हाला संस्थान की अपूरणीय क्षति हुई है। आप हाला संघ के उत्थान में सदैव जागरुक रहते थे।

गच्छीय प्रवृत्तियों में अग्रगण्य श्री अभयकुमारजी को जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि समर्पित है।

सौ. श्रीमती प्रेमलताजी डोसी का स्वर्गवास

खजवाणा निवासी संघवी श्री विजयराजजी डोसी की धर्मपत्नी सौ. श्रीमती प्रेमलताजी डोसी का अचानक स्वर्गवास हो गया।

श्रीमती प्रेमलताजी अत्यन्त धर्म स्वभाव वाली सुश्राविका थी। वे सच्चे अर्थों में धर्मसहायिका थी। श्री विजयराजजी के हर कार्य में पूर्ण सहयोगिनी थी।

बेंगलूरु नगर में उनके द्वारा कराए गए उपधान तप में उन्होंने स्वयं ने उपधान तप की आराधना संपन्न की थी। खजवाणा से नाकोडा तीर्थ के छह री पालित पद यात्रा संघ के व आयोजक होने के साथ-साथ आराधक भी थे। देवपूजा, सामायिक आदि धर्मक्रियाऐं नियमित रूप से प्रतिदिन करते थे। गिरनार महातीर्थ में जिनमंदिर, दादावाडी, धर्मशाला आदि के निर्माण के निर्णय में श्रीमती डोसी जी की महत्त्वपूर्ण भूमिका व प्रेरणा रही। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

श्री नेमीचंदजी सुराणा

रायपुर निवासी श्रावकवर श्री नेमीचंदजी सुराणा का स्वर्गवास हो गया। उनके सुपुत्र श्री संजयकुमारजी सुराणा जो कि पूज्य आचार्यश्री के परम भक्त हैं। श्री सुराणाजी परम धार्मिक स्वभाव के व्यक्ति थे।

जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

श्रीमती सुआदेवी छाजेड

पादरु-चेन्नई निवासी संघवी श्री पूनमचंदजी छाजेड की धर्मपत्नी श्रीमती सुआदेवी छाजेड का स्वर्गवास हो गया। श्रीमती छाजेड अत्यन्त धार्मिक प्रवृत्ति के थे। संघवी श्री पुखराजजी छाजेड की माताजी थे। आपने अपने जीवन में तीनों उपधान तप की आराधना की थी। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

संघवी श्री मदनलालजी बैद

इन्दौर निवासी संघवी श्री मदनलालजी बैद का स्वर्गवास हो गया। पूज्य अवंती तीर्थोद्धारक श्री के इन्दौर चातुर्मास के पश्चात आपके द्वारा ही इन्दौर नगर से अवंती तीर्थ का छह री पालित संघ का आयोजन किया गया था। जिसकी महिमा मालवा अंचल में विशेष रूप से हुई थी। वृद्ध अवस्था होने पर भी प्रतिदिन पूजा, सामायिक आदि धर्मक्रियाऐं हमेशा करते थे। जहाज मंदिर परिवार हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित करता है।

श्रीमती शांतादेवी लोढ़ा

टोंक निवासी श्री सोभागमलजी सा. लोढा की धर्मपत्नी श्रीमती शांतादेवी लोढा का स्वर्गवास हो गया। मालपुरा में पूज्य गुरुदेवश्री की पावन निश्रा में आपकी ओर से महामंगलकारी उपधान तप का आयोजन हुआ था। जिसमें आपने सजोडे उपधान तप की आराधना की थी। तीनों उपधान आपने संपन्न किये थे। सामायिक, स्नात्र पूजा आदि नियमित रूप से करते थे। अन्तिम समय में संथारा ग्रहण किया था। जहाज मंदिर परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजली अर्पित है।

गिरनार के गीतों का लोकार्पण

पूज्य आचार्य श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा. के शिष्य पूज्य मुनि श्री श्रेयांसप्रभसागरजी म. ने श्री गिरनार तीर्थ के प्रति अपने समर्पण भावों को अभिव्यक्त करते हुए अभिनव गीतों की रचना की। जिसे स्वर दिया पारस गडा, जैनम् वारिया, भाविक शाह ने! गीतों को यू ट्यूब के 'नेमि कान्ति मणि सोंग्स' चेनल पर लोकार्पण किया गया। इन गीतों को हजारों लोकों द्वारा सुना जा रहा है।

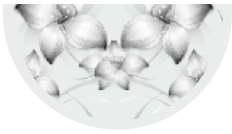

जहाज मन्दिर पत्रिका के सम्माननीय संरक्षक

श्री लालचन्दजी कानमलजी गुलेच्छा, अक्कलकुआं
श्री राजेन्द्रकुमार राणुलालजी डागा, अक्कलकुआं
श्री भंवरलालजी हस्तीमलजी कोचर, अक्कलकुआं
श्री ज्ञानचन्दजी रामलालजी लूणिया, अजमेर
श्री पूनमचन्दजी नैनमलजी मरड़िया, डंडाली- अहमदाबाद
श्री माणकमलजी मांगीलाल नरेशकुमारजी धारीवाल, चौहटन-अहमदाबाद
श्री विनोद शर्मा पुत्र श्री घनश्यामप्रसाद शर्मा, सोमपुरा, आगरा
श्री जगदीशचन्द, नितेश कुमारजी छाजेड़ (हरसाणी-बाड़मेर) हाल इचलकरंजी
श्री देवीचंदजी छोगालालजी वडेरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी ओमप्रकाशजी पारसमलजी छाजेड़, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री संपतराजजी लूणकरणजी संखलेचा, बाड़मेर- इचलकरंजी
श्री मांगीलालजी खीमराजजी छाजेड़, रामसर- इचलकरंजी
श्री नेमीचंदजी राणामलजी छाजेड़, हरसाणी वाले इचलकरंजी
श्री ओमप्रकाशजी मुलतानमलजी वैद मुथा कवास वाले, इचलकरंजी
श्री छगनलालजी देवीचंदजी मेहता, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अशोककुमारजी सुरतानमलजी बोहरा, भिंयाड़-इचलकरंजी
श्री मिश्रीमलजी विजयकुमार रणजीत ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री शिवकुमार रिखबचंदजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
स्व. रूपसिंहजी मदनसिंह रतनसिंह राजपुरोहित-इचलकरंजी
श्री फरसराजजी रिखबदासजी सिंघवी, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री हीराचंदजी मांगीलालजी बागरेचा, सिवाना-इचलकरंजी
शा. मोतीलाल एण्ड सन्स, इचलकरंजी
श्री प्रवीणकुमार पृथ्वीराजजी ललवानी, इचलकरंजी
श्री पुखराजजी आसुलालजी बोहरा, बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री पुखराजजी सरेमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री भीखचंदजी सुमेरमलजी ललवानी, सिवाना-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी कन्हैयालालजी भूरचंदजी मालू, हरसाणी-इचलकरंजी
श्री बाबूलालजी रमेश अशोक लूंकड़ मोकलसर-इचलकरंजी
श्री रिषभलाल मांगीलालजी छाजेड़, इंचलकरंजी
शा. पीरचंद बाबुलाल एण्ड कं., बाड़मेर-इचलकरंजी
श्री अरूणकुमारजी बापूलालजी डोसी, इन्दौर
श्री टीकमचन्दजी हीराचन्दजी छाजेड़, उज्जैन
डॉ. यू.सी. जैन अजयजी संजयजी लषितजी पार्थ जैन, उदयपुर
श्री फतेहलालजी सुल्तानजी लक्ष्मणजी आजादजी संजयजी सिंघवी, उदयपुर
श्री मोहनसिंहजी पुत्र राजीव पौत्र चिराग दलाल, सुराणा, उदयपुर
श्री सुधीरजी चावत, उदयपुर
श्री किरणमलजी सावनसुखा, उदयपुर
श्रीमती शान्ति मेहता ध.प.श्री विजयसिंहजी मेहता, उदयपुर
श्री दौलतसिंहजी प्रतापसिंहजी गाँधी, उदयपुर
श्री शंकरलालजी बाफना, उदयपुर
श्रीमती शांतादेवी जुहारमलजी गेलड़ा, उदयपुर
श्री नगराजजी पवनराजजी अशोककुमारजी मेहता, उदयपुर
श्री बलवन्तसिंहजी करणसिंह सुरेन्द्रसिंह पारख, उदयपुर
श्री मीठालालजी मनोजकुमार गुणेशमलजी भंसाली, उम्मेदाबाद-बैंगलोर
श्री दिलीपजी छाजेड़, खांचरोद-उज्जैन
श्री कुरीचन्दजी चन्दनमलजी मलासिया, ऋषभदेव
शा. कांतिलालजी पारसमलजी कागरेचा, ओटवाला
श्रीमती शांतिदेवी जुगराजजी पंचाणमलजी मरडिया, चितलवाना-कारोला-मुंबई
घोड़ा श्री सुमेरमलजी मोतीलालजी बाबूलालजी श्रीश्रीमाल, केशवणा
श्री रामरतनजी नरायणदासजी छाजेड़, केशवणा- डोम्बीवल्ली
श्री लक्ष्मीचन्दजी केसरीमलजी चण्डालिया, कोटा
श्री पन्नालालजी महेन्द्रसिंहजी गौतमकुमारजी नाहटा, कोलकात्ता-दिल्ली
श्री जगदीशकुमार खेताजी सुथार, कोलीवाड़ा
श्री प्रेमचन्दजी संतोकचन्दजी गुलेच्छा, खापर
सौ. रूपाबाई गुलाबचन्दजी चौरड़िया, खापर
श्री पारसमलजी मांगीलालजी लूणावत, खेतिया
श्री प्रमोदकुमारजी, बंशीलालजी भंसाली, खेतिया
श्री किशनलालजी हसमुख कुमार मिलापजी भंसाली, खेतिया

श्रीमती मानकुँवरबाई गेनमलजी भंसाली, खेतिया-नासिक
श्री नेवलचन्दजी मोहनलालजी जैन, गाजियाबाद
शा. मुलतानमलजी भवंरलालजी नाहटा, गांधीनगर
मिस्त्री मोहनलाल आर. लोहार, पो. चांदराई जि.जालोर
शा. जांवतराजजी भीमराजजी मोहनलालजी गांधी, चितलवाना
श्री लाधमलजी मावाजी मरड़िया, चितलवाना
श्री सुरेशकुमार हिन्दूमलजी लूणिया, धोरीमन्ना-चैन्नई
श्री हीराचंदजी बबलसा गुलेच्छा, टिंडीवनम-चैन्नई
शा. डूंगरचंदजी यशकुमारजी ललवानी, सिवाना-चैन्नई
श्री कन्हैयालालजी सुभाषचंदजी नरेशचंदजी रांका, चैन्नई
शा. समरथमलजी सोनाजी रांका, उम्मेदाबाद-चैन्नई
श्री सुगनचंदजी राजेशकुमारजी बरडिया, चैन्नई
श्री पदमकुमारजी प्रवीणकुमारजी टांटिया, जोधपुर-चैन्नई
शा. गिरधारीलालजी बादरमलजी संखलेचा, पादरू-चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी प्रकाशचंदजी लोढ़ा, चैन्नई
श्री पदमचंदजी दिनेशकुमारजी कोठारी, चैन्नई
मै. एम. के. कोठारी एण्ड कम्पनी, चैन्नई
श्री वीरेन्द्रमलजी आशीषकुमार मेहता वडपलनी-चैन्नई
श्री एस. मोहनचंदजी ढ़ड्ढा, चैन्नई
श्रीमती कमलादेवी मूलचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
श्री माणकचंदजी धर्मचंदजी गोलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
शा. लालचन्दजी कान्तीलालजी छाजेड़, गढ़सिवाना-चैन्नई
श्रीमती इचरजबाई मिलापचंदजी डोसी, चैन्नई
एम. नरेन्द्रकुमारजी कवाड़, चैन्नई
श्री नेमीचंदजी राजेशकुमारजी कटारिया, चैन्नई
श्री आर. मफतलाल, सौभागबेन चन्दन, चैन्नई
श्री बाबूलालजी हरखचन्दजी छाजेड़ (सी.टी.सी.), चेन्नई
शा. जेठमलजी आसकरणजी गुलेच्छा, फलोदी-चैन्नई
मै. राखी वाला, चैन्नई
श्री द्वारकादासजी पीयुष अनिल भरत महावीर डोशी, चौहटन
श्री महताबचन्दजी विशालकुमारजी बांठिया, जयपुर-मुंबई
श्री जसराज आनन्दकुमार चौपड़ा, जयपुर
शा. प्रकाशचंदजी विजयचंदजी लोढ़ा, जयपुर
श्री जुगराजजी(सी.ए.) कैलाशजी दिनेशजी चौधरी, जालोर- भायंदर
श्री विमलचंदजी सौ. मेमबाईसा सुराणा, जयपुर
श्री किशनचन्दजी बोहरा सौ. सुधादेवी, जयपुर
श्री कनकजी श्रीमाल, जयपुर
श्री महावीरजी मुन्नीलालजी डागा, जयपुर
श्रीमती जतनबाई ध.प. स्व. मेहताबचंदजी गोलेछा, जयपुर
श्रीमती सरोज फतेहसिंहजी सिद्धार्थजी बरड़िया, जयपुर
श्री रूपचन्दजी नरेन्द्र देवेन्द्र नमनजी भंसाली, हालावाले-जयपुर
श्री दुलीचन्दजी, धर्मेशकुमारजी टांक, जयपुर
श्री महरचन्दजी मनोजकुमारजी धोंधिया, जयपुर
श्री मनमोहनजी अनुपजी बोहरा, जयपुर
श्री जितेन्द्रजी नवीन अजय नितीन महमवाल-श्रीमाल, जयपुर
श्री राजेन्द्रकुमारजी संजयजी संदीपजी छाजेड़, जयपुर
श्री इन्द्रचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी ज्ञानचन्दजी भण्डारी, जयपुर
श्री विमलचन्दजी महावीरचन्दजी पंसारी, जयपुर
श्री पारसमलजी पंकजकुमारजी गोलेछा, जयपुर
श्री शांतिचन्दजी विमलचन्दजी पदमचन्दजी पुंगलिया, जयपुर
श्री हुकमीचन्दजी विजेन्द्रजी पूर्णेन्द्रजी कांकरिया, जयपुर
श्री ताराचन्दजी विजयजी अशोकजी राजेन्द्रजी संचेती, जयपुर
श्री भीमसिंहजी तेजसिंहजी खजांची, जयपुर
श्री सौभागमलजी ऋषभकुमारजी चौधरी, जयपुर
श्री संतोषचन्दजी विजयजी अजयजी झाड़चूर, जयपुर
श्री रतनलालजी अतुल अमित श्रीश्रीमाल हालावाले जयपुर
श्री माणकचन्दजी राजेन्द्रजी ज्ञानचन्दजी गोलेछा, जयपुर
श्री उमरावचन्दजी प्रसन्नचन्दजी किशनचन्दजी डागा, जयपुर
श्री अभयकुमारजी अशोककुमार अनूपकुमार पारख-जयपुर
श्री त्रिलोकचन्दजी प्रेमचन्दजी सिंघी, जयपुर
श्री घनश्यामदास दीपककुमारजी पारख, हालावाले जयपुर
श्री सुरेन्द्रमलजी गजेन्द्रजी धर्मेन्द्रजी पटवा, जालौर
संघवी शा. अशोककुमारजी मानमलजी गुलेच्छा, जीवाणा- चैन्नई
श्री भंवरलालजी, बाबूलालजी पारख, जीवाणा
संघवी कानमलजी बाबूलालजी नेमीचंदजी अशोकजी गोलेछा, जीवाणा-चेन्नई
श्री खीमचन्दजी अशोककुमारजी कंकूचौपड़ा, जीवाणा- बैंगलोर
श्रीमती प्रेमलताजी श्री चन्द्रराजजी सिंघवी, जोधपुर
श्री गोविन्दचन्दजी राजेशजी राकेशजी मेहता जोधपुर-मुम्बई
श्री लक्ष्मीचन्द हलवाई पुत्र श्री जेठमलजी अग्रवाल, जोधपुर
श्री लूणकरणजी घीसुलालजी सौ. चन्द्रादेवी सेठिया, तलोदा
श्रीमती इन्द्रा महेशजी जैन नाहटा नई दिल्ली
श्री बी.एम. जैन लक्ष्मीनगर, दिल्ली
श्री घनश्यामदासजी नवीनजी सुशीलजी सुनीलजी जैन, नई दिल्ली
श्री शांतिलालजी जैन दफ्तरी, नई दिल्ली
श्री शीतलदासजी विरेन्द्रकुमारजी राक्यान, नई दिल्ली
श्री ज्ञानचन्दजी महेन्द्रकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री पवित्रकुमारजी सुनीलजी, गुनीतजी बाफना, कोटा-नई दिल्ली
श्री अरुणकुमारजी हर्षाजी हर्षावत, नई दिल्ली
श्री राजकुमारजी ओमप्रकाशजी रमेशकुमारजी चौरड़िया, नई दिल्ली
श्री मोतीचन्दजी श्रीमती आभादेवी पालावत, नई दिल्ली
श्री विरेन्द्रजी राजेन्द्रजी अभिषेकजी आदित्यजी पीयूषजी मेहता, दिल्ली

श्री रिखबचंदजी राहुलकुमारजी मोघा, नई दिल्ली
श्री अशोककुमारजी श्रीमती चंदादेवी जैन, नई दिल्ली
श्रीमती नीलमजी सिंघवी, नई दिल्ली
श्रीमती विजयादेवी धीरज बहादुरसिंहजी दुग्गड़, नई दिल्ली
श्री शांतिप्रकाशजी अशोककुमार प्रवीण सिंधड़, अनूपशहर, नई दिल्ली
श्रीमती भारतीबेन शांतिलालजी चौधरी, नई दिल्ली
श्री सुमेरमलजी मिश्रीमलजी बाफना, मोकलसर-दिल्ली
श्री चन्द्रसिंहजी विपुलकुमारजी सुराणा, दिल्ली
श्री प्रकाशकुमारजी प्रेणितकुमारजी नाहटा, जसोल-दिल्ली
शा. महेशकुमारजीर विरधीचंदजी गांधी, धोरीमन्ना
श्रीमती भंवरीदेवी गोरधनमलजी प्रतापजी सेठिया, धोरीमन्ना
संघवी मुथा चन्दनमलजी महेन्द्र नरेन्द्र तातेड़, पादरू-नंदुरबार
श्री भँवरलालजी ललित राजु कैलाश गौतम संखलेचा, पादरू- चैन्नई
श्री मूलचंदजी बख्तावरमलजी बाफना हीराणी, पादरू
संघवी श्री पूनमचंदजी पुखराजजी छाजेड़, पादरू-मुम्बई-चैन्नई
श्री भंवरलालजी नेमीचन्दजी कटारिया, पादरू
श्री रूपचन्द जवेरीलालजी गोलेछा ढालूवाले, पादरू
मेहता शा. पुखराज सुमेरमलजी तातेड़, पादरु-सेलम
श्री बाबूलालजी शर्मा, राकांवत डेकोरेटर्स, तखतगढ़-पाली
शिल्पी श्रवणकुमार सुरताजी प्रजापति,गोदावरी मार्बल, पिण्डवाड़ा
श्री रतनचन्दजी सौ. निर्मलादेवी बच्छावत, फलोदी
श्री रमेशचन्दजी सुशीलकुमारजी बच्छावत, फलोदी
श्री मनोहरमलजी दलपतकुमार महेश हरीश नाहटा, हालावाले फालना
श्री खूबचन्दजी चन्दनमलजी बोहरा, हालावाले फालना
श्री मोतीचन्दजी फोजमलजी झाबक, बड़ौदा
श्री चम्पालालजी झाबक परिवार, बड़ौदा
श्री आसुलालजी मांगीलालजी बाबूलालजी डोशी, चौहटन-बाड़मेर
श्री चिन्तामणदासजी, तगामलजी बोथरा, बाड़मेर
श्री रिखबचंदजी प्रकाशचन्दजी सेठिया, चौहटन-बाड़मेर
श्री रतनलालजी विनोदकुमार गौतमकुमार बोहरा, हालावाले, बाड़मेर
श्री आसूलालजी ओमप्रकाशजी संकलेचा, बाड़मेर
श्री रामलाल, महेन्द्र, भरत, धवल मालू, डाकोर-बाडमेर
श्री जगदीशचन्द देवीचन्दजी भंसाली, बाड़मेर-पाली
श्री शंकरलाल केशरीमलजी धारीवाल, बाड़मेर
श्री बाबूलाल भगवानदासजी बोथरा, बाड़मेर
शा. मनसुखदास नेमीचंदजी पारख, हरसाणीवाला, बाड़मेर
शा. सुरेशकुमार पवनकुमार मुकेशकुमार पुत्र श्री शंकरलाल बोहरा, बाड़मेर
श्री मुन्नीलालजी जयरूपजी नागोत्रा सोलंकी, बालवाड़ा
शा. अमृतलालजी पुखराजजी कटारिया सिंघवी बालोतरा- मुंबई
श्री उत्तमराजजी पारसकंवर सिंघवी, बिजयनगर
श्री सम्पतराजजी सपनकुमारजी गादिया, पाली बैंगलौर
श्री पुखराजजी हस्तीमलजी पालरेचा, मोकलसर-बैंगलोर
शा. घेवरचंदजी शंकरलालजी साकरिया, सांडेराव-बैंगलोर
श्री आनन्दकुमारजी कांतिलाल प्रकाशचन्दजी चौपड़ा, हालावाले बैंगलोर
श्री वरदीचंदजी पंकजकुमारजी महावीरकुमारजी बाफना, बैंगलोर
संघवी श्री पुखराजजी तेजराजजी गुलेच्छा, मोकलसर- बैंगलोर
श्री राजेन्द्रकुमारजी तिलोककुमारजी बोथरा, बैंगलोर
श्री छगनलालजी शांतिलालजी लूणावत, शांतिनगर बैंगलोर
शा. सज्जनराजजी रतनचंदजी मुथा, बैंगलोर
श्री तेजराजजी मनोजकुमारजी आनन्दकुमारजी मालाणी, मोकलसर-बैंगलोर
शा. मूलचन्दजी किरण अरूण विक्रम पुत्र पौत्र मिश्रीमलजी भंसाली, सिवाना-बैंगलोर
श्री भंवरलालजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री पारसमलजी देवाजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री जुगराजजी घेवरचंदजी पालगोता चौहान, बैंगलोर
श्री कन्हैयालालजी ओटमलजी छगनलालजी सुजाणी रांका, बैंगलोर
श्री गेनमलजी हरकचंदजी लूणिया, बैंगलोर
श्री मोटमलजी कानमलजी सदानी, बैंगलोर
संघवी शा. मांगीलालजी भरतमलजी, बैंगलोर
श्री पी. एच. साह, बैंगलोर
श्री विनोदकुमारजी पारख, बैंगलोर
श्री माणकचंदजी, गौतमचंदजी चौपड़ा, ब्यावर
श्री संजयकुमारजी, कनिष्ठकुमारजी बरडिया, ब्यावर
श्री ओमप्रकाशजी राजेशजी (ओमजी दवाईवाला), ब्यावर
श्री उगमराजजी सुरेशकुमारजी मेहता, ब्यावर
सेठ श्री शंभुमलजी बलवन्तजी यशवंतजी रांका, ब्यावर
श्री मदनलालजी दीपचंदजी कोठारी, ब्यावर
श्री कुशलचंदजी पारसकुमारजी सतीशकुमारजी मेड़तवाल, ब्यावर
श्री शांतिलालजी सज्जनराजजी कुशलराजजी ऋषभ तातेड़-गडवानी, ब्यावर
श्री कानसिंहजी मधुसूदन सुदर्शन संजय चौधरी कोठियां, भीलवाड़ा
श्री जीवनसिंहजी दीपककुमार राजेशकुमारजी लोढ़ा, गुरलां-भीलवाड़ा

श्री प्रेमसिंहजी राजेन्द्रकुमार नरेन्द्रकुमारजी बोहरा गुरलां-भीलवाड़ा
श्री भंवरलालजी बलवन्तसिंहजी मेहता, गुरलां-भीलवाड़ा
शा. भीकचंदजी धनराजजी देसाई, सिणधरी-मल्हारपेठ
संघवी श्री हंसराजजी रमेशजी सुरेशजी पुत्र श्री मोहनलालजी मूथा मांडवला
शा. मोहनलालजी किरण दिनेश प्रवीण पुत्र पौत्र शा. बस्तीमलजी, मांडवला
मूथा शा. नेनमलजी पन्नालालजी सोनवाड़िया, मांडवला
श्री पारसमलजी भानमलजी छाजेड़, मांडवला-मुम्बई
श्रीमती पुष्पाजी ए., केतनजी चेतनजी जैन पाली-मुम्बई
श्री मोतीलालजी ओसवाल, पादरू-मुम्बई
श्री अतुलजी हनवंतचन्दजी भंसाली, जोधपुर-मुम्बई
श्री महेन्द्रकुमारजी शेषमलजी दयालपुरा वाले, मुम्बई
श्री कन्हैयालालजी भगवानदासजी डोसी-मुम्बई
श्री रिखबचन्दजी जैन, मुम्बई
शा. अनिल रणजीतसिंहजी पारख, जोधपुर-मुंबई
श्रीमती टीपूदेवी कालुचंदजी, बदामीदेवी अरविंदजी श्रीश्रीश्रीमाल सांचौर-मुंबई
शा. भंवरलालजी कमलचन्द रिषभ गुलेच्छा, मुम्बई
श्री बाबुलालजी सुमेरमलजी, मुंबई
श्रीमती सुआदेवी उदयचंदजी नाथाजी, जीवाणा-मुंबई
श्री जितेन्द्र केशरीमलजी सिंघवी, मुंबई
श्री रमेश सागरमलजी सियाल, मुंबई
श्री गौतमचंद डी. भंसाली, मुंबई
शा. सागरमलजी फूलचंदजी सियाल, मुंबई
श्रीमती मथरीदेवी शांतिलालजी वाघेला, सांचौर-मुंबई
श्री मोहनलालजी केवलचंदजी छाजेड़, डुठारिया-मुंबई
श्री चतुर्भुजजी विजयराजजी श्रीश्रीमाल, फालना-मुंबई
श्री भंवरलालजी विरदीचन्दजी छाजेड़, हरसाणी-मुंबई
श्री वंसराजजी मिश्रीमलजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री मीठालालजी अमीचंदजी पालरेचा भरतवाला, मोकलसर
श्री किस्तुरचन्दजी छगनलालजी चौपड़ा, रतलाम
श्री मदनलालजी रायचन्दजी शंखलेशा, रामा-कल्याण
श्री अनूपचन्दजी अनिल अशोक अजय कोठारी, रायपुर
श्री नेमीचन्दजी श्यामसुन्दरजी बेदमुथा, रायपुर
श्री उमेशकुमारजी मुकेशकुमारजी तातेड़, रायपुर
स्व. हस्तीमलजी छोगाजी हिरोणी, रेवतडा-चेन्नई
श्री नथमलजी भंवरलालजी सौ. किरणदेवी पारख, लोहावट
श्रीमती शांताबेन हरकचन्दजी बोथरा, सांचौर
श्री कानूगो प्रकाशमलजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
श्री मूलचंदजी मिश्रीमलजी बुर्ड, सांचौर-मुम्बई
श्री धुडचंदजी रतीलालजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर-मुम्बई
श्री रावतमल सुखरामदास कमलेश विमल धारीवाल चौहटन-सांचौर
श्री मिश्रीमलजी चन्दाजी मरड़िया, सांचौर
स्व. दाड़मीदेवी श्री पुखराजजी बोथरा, सांचौर
श्री हरकचन्दजी सेवन्तीजी जितेन्द्र विनोद राजेश शाह, सांचौर
शा. प्रकाशंचद पारसमलजी छाजेड़, सांचौर
श्री सुमेरमलजी पुखराजजी बोथरा, सांचौर-हैदराबाद
श्री दिलीपकुमारजी जांवतराजजी श्रीश्रीश्रीमाल, सांचौर- मुंबई
श्री जुगराजजी रमेशजी उत्तमजी महेन्द्रजी छाजेड़ सिवाना- मदुराई
श्रीमती सुखीदेवी श्री भीमराजजी बादरमलजी छाजेड़, सिवाना-पूना
श्री पारसमलजी चंपालालजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री प्रकाशकुमार अंकितकुमारजी जीरावला, सूरत
श्री इन्द्रचन्दजी गौतमचन्दजी चौपड़ा, बिलाड़ा-हैदराबाद
श्री माणकचंदजी छाजेड़, सिवाना-हैदराबाद
श्री बाबूलालजी मालू-सूरत
श्री प्रेमचंदजी गेमरमलजी छाजेड़-बाड़मेर-सूरत
शा. पारसमलजी शेरमलजी गोठी, डांगरीवाला-सूरत
श्री मोहनलालजी हरखचंदजी गुलेच्छा, विजयवाड़ा
श्रीमती जतनदेवी सेठिया चेरिटेबल ट्रस्ट, हावड़ा
श्री भीकमचन्दजी बाबूलालजी तोगमलजी गोलेछा, पादरू-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी प्रकाशचंदजी चौपड़ा, बिलाडा-हैदराबाद
श्री रतनचंदजी उत्तमचंदजी चौपड़ा, हैदराबाद
श्री गौतमचन्दजी मीनादेवी सौरभ, सुलभ कोठारी,रायपुर (छ.ग.)
श्रीमती सुरजदेवी गुलाबचन्दजी मुणोत, रायपुर (छ.ग.)
श्री भूरमलजी नवलखा राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री संजयजी सिंघी, राजनांद गांव (छ.ग.)
श्री हस्तीमलजी अभिषेक कुमार धारीवाल, बाड़मेर
-श्री जसराज राणुलालजी कोचर, अक्कलकुआ
-श्री मेघराजजी तेजमलजी ललवानी, अक्कलकुआ
-श्री पुण्यपालजी अनिलजी सुनीलजी सुराणा, इन्दौर
-श्री गेंदमल पुखराजजी चौपड़ा, उज्जैन
-श्री रतनचन्द जयकुमार जिनेन्द्रकुमार चौपड़ा, उज्जैन
-श्री पारसमलजी वी. जैन, सांचौर-बडोदरा
-श्री धवलचन्दजी छगनलालजी बोथरा, सांचौर
-श्री पारसमलजी हंजारीमलजी बोहरा, सांचौर
-श्री चुन्नीलालजी मफतलालजी मरड़िया, सांचौर-सूरत
-श्री गौतमचन्दजी राजमलजी डूंगरवाल, देवड़ा-सूरत
-श्री मांगीलालजी आसुलालजी मालू, बाड़मेर-सूरत
-शा. जुगराजजी मिश्रीमलजी तलावट, उम्मेदाबाद-सेलम
-श्री कन्हैयालालजी मुकेशकुमारजी, सोमपुरा, लुणावा

जटाशंकर

आचार्य जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.

जटाशंकर गरीब आदमी था। वह मेहनत मजूरी करके अपना काम चलाता था। भाग्य साथ नहीं देने के कारण मजदूरी भी उसे कम ही मिल पाती थी।

एक चौराहे पर वह खड़ा था। वहीं सेठ घटाशंकर भी खड़े-खड़े किसी मजदूर की तलाश कर रहे थे। उनके पास चीनी मिट्टी से बने बर्तनों का एक पिटारा था जिसे घर पहुँचाना था। उसके लिये वे मजदूर की खोज में चारों ओर देख रहे थे। तभी उनकी नजर जटाशंकर पर पड़ी।

सेठ घटाशंकर ने उसे आवाज दी। पास बुलाया। उसे कहा- मजदूरी करेगा! यह पिटारा मेरे घर पहुँचाना है। जटाशंकर ने कहा- मेहनताना क्या दोगे!

घटाशंकर ने कहा- मेहनताने के नाम पर मैं तुम्हें सुनहरी सलाह दूंगा, जो तुम्हारे जीवन में बहुत उपयोगी होगी। इस प्रकार तेरा रास्ता भी कट जायेगा। लेकिन पैसा बिल्कुल नहीं दूंगा।

जटाशंकर विचार में पड़ गया। उसने सोचा- सेठ बहुत अनुभवी मालुम होते हैं। मजदूरी के पैसे तो और कहीं कमा लूंगा। पर इनके अनुभव का सार आज सलाह के रूप में मुझे मिलेगा। ऐसी सलाह और कहाँ मिलेगी!

उसने पिटारा उठाया और सेठ के साथ रवाना हुआ।

सेठ मौन चल रहा था। 5 मिनट बीतने पर आखिर जटाशंकर ने कहा- आप सलाह देने वाले थे।

सेठ ने कहा- सुन! मैं तुम्हें स्वर्णिम सूत्र दे रहा हूँ। ध्यान से सुनना और उस पर अमल करना।

'यदि कोई तुम्हें कहे कि वाहन में यात्रा करने के बजाय पैदल यात्रा करना ज्यादा अच्छा है, तो उसकी बात पर भरोसा करना नहीं।'

जटाशंकर को इस सलाह में कुछ नवीनता, गंभीरता, यथार्थता नजर नहीं आई। यह क्या सलाह है!

थोडी दूर जाने के बाद जटाशंकर ने फिर सलाह की याद दिलाई।

तब सेठ ने कहा- 'यदि कोई तुम्हें कहें कि भोजन करने के बजाय भूखा रहना ज्यादा अच्छा है, तो उसकी बात पर भरोसा करना नहीं।'

जटाशंकर को लगा, यह क्या सलाह है! यह तो व्यर्थ बात है। ऐसी फालतू सलाह से जटाशंकर अकुलाया। उसने बेमन से कहा- अच्छा!

पाँच मिनट बाद जटाशंकर ने सलाह की बात फिर याद दिलाई।

सेठ ने कहा- 'यदि कोई तुम्हें कहें कि तुमसे ज्यादा मूर्ख इस दुनिया में कोई दूसरा है, तो उसकी बात पर भरोसा करना नहीं।'

सेठ का घर सामने ही था। पर सेठ की सलाह सुनकर जटाशंकर का माथा घूम गया। उसने रोष में आकर सेठजी ने कहा- आपके एक घड़ी के सत्संग से मुझे भी सलाह मशविरा देना आ गया है। एक सलाह मैं भी आपको देना चाहता हूँ।

सेठ ने कहा- बोल! जटाशंकर ने पिटारा जमीन पर जोर से पटका और बोला- 'यदि कोई आपको कहें कि इस पिटारे में रखे चीनी मिट्टी के बर्तन टूटे नहीं है, तो उसकी बात पर भरोसा करना नहीं।'

सेठ चिल्ला रहा था। मेरे सारे बर्तन तोड़ दिये।

उसकी सलाह सुनकर चुप हो गया। उसकी ही सलाह रिवर्स होकर उसके पास आयी थी।

कर्म सिद्धान्त ऐसा ही है। यहाँ जो जैसा करता है, उसे वैसा ही फल मिलता है।

सज्झाय की एक कडी है- जैसा कर्म करे, वैसा जीव भरे!

हमारा 'करना' ही 'पाना' है।

जहाज मंदिर में पर्युषण महापर्व की झलकियां

जहाज मंदिर ट्रस्ट मंडल एवं परिवार द्वारा सभी को मिच्छामि दुक्कडं

RNI : RAJHIN/2004/12270
Postal Registration no. RJ/SRO/9625/2018-2020 Date of Posting 7th

॥ तीर्थाधिपति श्री शान्तिनाथाय नमः॥

श्री स्तंभन पार्श्वनाथाय नमः | श्री सुमतिनाथाय नमः | श्री महावीरस्वामिने नमः

अनंतलब्धिनिधानाय श्री गौतमस्वामिने नमः
खरतरबिरुदधारक श्री जिनेश्वरसूरिभ्यो नमः
दादा गुरुदेव श्री जिनदत्त–मणिधारी जिनचन्द्र–जिनकुशल–जिनचन्द्रसूरि सद्गुरुभ्यो नमः
पू. गणनायक श्री सुखसागर–सद्गुरुभ्यो नमः

पूज्य गुरुदेव प्रज्ञापुरुष आचार्य
श्री जिनकांतिसागरसूरीश्वरजी म.सा. की समाधि भूमि

जहाज मंदिर
मांडवला को मिला
पूज्यश्री के चातुर्मास का परम सौभाग्य...

पूज्य गुरुदेव अवंति तीर्थोद्धारक खरतरगच्छाधिपति आचार्य
श्री जिनमणिप्रभसूरीश्वरजी म.सा.
पूज्य ब्रह्मसर तीर्थोद्धारक आचार्य **श्री जिनमनोज्ञसूरीश्वरजी म.** आदि ४ मुनि
एवं
पूजनीया संघरत्ना प्रवर्तिनी **श्री शशिप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा,
पूजनीया साध्वी **श्री विमलप्रभाश्रीजी म.** आदि ठाणा,
पूजनीया साध्वी **श्री कल्पलताश्रीजी म.** आदि ठाणा 29 सहित विशाल साधु साध्वी समुदाय का

श्रुत साधना वर्षावास आनन्द पूर्वक चल रहा है।

चातुर्मास शुभ स्थल

श्री जिनकांतिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट जहाज मंदिर

पो. मांडवला–343042 जिला–जालोर (राजस्थान), फोन– 9649640451

चलो! घर बैठे–बैठे ही चातुर्मास की मंगलकामनाएँ करते हैं...

श्री जिनकान्तिसागरसूरि स्मारक ट्रस्ट,
जहाज मन्दिर, माण्डवला - 343042, जिला - जालोर (राजस्थान)
फोन : 02973-256107 / 256192 फैक्स : 02973-256040, 09649640451
e-mail : jahaj_mandir@yahoo.co.in
www. jahajmandir.com

श्री जिनकांतिसागर सूरि स्मारक ट्रस्ट, माण्डवला के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक डॉ. यू. सी. जैन द्वारा महालक्ष्मी कम्प्यूटर सर्विस पुरा मोहल्ला, खिरणी रोड, जालोर से मुद्रित एवं जहाज मन्दिर, मांडवला, जि. जालोर (राज.) से प्रकाशित।
सम्पादक - डॉ. यू. सी. जैन
www.jahajmandir.org
शब्दांकन : धर्मेन्द्र बोहरा, जोधपुर-98290 22408